ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष: 14 अंक: 162 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका नवम्बर 2021

मैं इस पृथ्वी का नहीं हूँ, मैं असीम ऊँचाई से आया हूँ। मुझे यहाँ खींचा गया है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

मेरी तस्वीर नहीं मरेगी।

मेरी आवाज तो आकाश में चली गई अब इसको कोई रोक नहीं सकेगा और मेरी तस्वीर नहीं मरेगी, कभी नहीं मरेगी।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष: 14 अंक: 162 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका नवम्बर 2021

❖ संस्थापक एवं संरक्षक:
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖ सम्पादक:
रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत
+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001
+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

अनुक्रम

मेरी तस्वीर नहीं मरेगी। 2
पुनर्जन्म और पूर्वाभास का सत्यापन सम्भव है। 4
भागवत शक्ति का अवतरण 16
योग में ही आदि और अंत 17
स्वर्णमयी भारत के बढ़ते कदम 18
सिद्धयोग ध्यान शिविर 23
साधना विषयक बातें 28
अवतार का आगमन 33
दिव्य जन्म और दिव्य कर्म 34
सिद्ध-योगियों की महिमा 39
हम गुरु की संतान हैं 44
रूपान्तरण 45
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से 50
योग के आधार 52
सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण 56
ध्यान की विधि 59

पुनर्जन्म और पूर्वाभास का सत्यापन सम्भव है।

अगर मनुष्य सच्चे अर्थों में अध्यात्मवादी है तो उसका सीधा सम्पर्क अपने ही शरीर स्थित आत्मा और परमात्मा तत्त्व से है। यह तत्त्व ही संसार के सर्वभूतों के कारण है। अतः भूत-भविष्य का सच्चा ज्ञान सम्भव है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है :- अध्याय 15 श्लोक 7 व 8 में-

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।।

इस देह में यह जीवात्मा मेरा सनातन अंश है, त्रिगुणमयी माया में स्थित हुई मन सहित पाँचों इन्द्रियों को आकर्षित करता है।

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्।।

वायु गन्ध के स्थान से गन्ध को जैसे ग्रहण करके ले जाता है वैसे ही देहादिकों का स्वामी जीवात्मा भी जिस पहले शरीर को त्यागता है, उससे इन मन सहित इन्द्रियों को ग्रहण करके फिर जिस शरीर को प्राप्त होता है, उसमें जाता है।

उपर्युक्त से यह स्पष्ट होता है कि जीवात्मा का साक्षात्कार होने का अर्थ है परमात्मा का साक्षात्कार और प्रत्यक्षानुभूति हो गई। क्योंकि जीवात्मा परमात्मा का ही सनातन अंश है अतः वह अमर है। उसने जितने भी शरीरों में वास किया है और आगे जितने शरीरों में वास करता हुआ संसार क्रम को निरन्तर गतिशील रखेगा, उसका ज्ञान सम्भव है। भगवान् ने सातवें अध्याय के 26वें श्लोक में कहा है :-

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन।।

"हे अर्जुन ! पूर्व में व्यतीत हुए और वर्तमान में स्थित तथा आगे होने वाले सभी भूतों को, मैं जानता हूँ, परन्तु मुझको कोई भी नहीं जानता है।' इससे यह बात स्पष्ट होता है कि ईश्वर तत्त्व को जानने वाला ही भूत और भविष्य को जान सकता है। इस युग के सभी धर्माचार्यों ने

www.the-comforter.org

युग के गुणधर्म के कारण अध्यात्म को केवल व्यवसाय के रूप में अपना रखा है।

धार्मिक ग्रन्थ कुछ बोलते हैं और वे अपनी चालाकी और तर्कबुद्धि के बल से लोगों को और ही कुछ समझा रहे हैं। क्योंकि इस समय का तथाकथित ज्ञान मनुष्य को कुछ परिणाम नहीं देता है, अतः संसार के लोगों का विश्वास धर्म गुरूओं से उठता जा रहा है।क्योंकि धर्मगुरूओं ने इसे पेट से जोड़ लिया है, अतः इसे चलाते रहना ही उनकी मजबूरी है। इस प्रकार की हठधर्मी वृत्तियों के कारण धर्म के विरुद्ध विद्रोह प्रारम्भ हो गये। भौतिक विज्ञान की उन्नति ने अध्यात्म गुरुओं की स्थिति और खराब कर दी। इस लिए अध्यात्म और भौतिक के रूप में एक ही तत्त्व विभाजित हो गया।दोनों दलों में भयंकर टकराव और दुर्भाव निरन्तर बढ़ता ही गया। क्योंकि भौतिक विज्ञान एक सच्चाई है,और सत्य, सत्य को आकर्षित करता है, इसलिए संसार के लोगों ने अध्यात्म को छोड़, भौतिक विज्ञान के सहारे सुख शान्ति की खोज प्रारम्भ कर दी।

मनुष्य शरीर की सभी प्रकार की सुख सुविधाएँ भौतिक विज्ञान ने उपलब्ध करा दीं, परन्तु संसार के मानव को सुख और शान्ति फिर भी नहीं मिल सकी। ज्यों-ज्यों विज्ञान उन्नति करता गया, अशान्ति बढ़ती ही गई। आज जो वस्तुस्थिति संसार की है, उसने विज्ञानवेत्ताओं को गहराई से सोचने के लिए मजबूर कर दिया है।आज वैज्ञानिक दबी जुबान से यह स्वीकार करने लगे हैं कि ज्ञान प्राप्त करने के उसके भौतिक साधनों के अतिरिक्त अन्य साधन भी हैं।

यह एक शुभ संकेत है। 'सच्चाई पसन्द' और 'सच्चाई परख' लोग ही इस

www.the-comforter.org

दिशा में तरक्की करके संसार को कुछ दे सकेंगे। बाकी जिन आध्यात्मिक गुरुओं से संसार के लोग उम्मीद लगाए बैठे थे, उनसे लोग निराश हो चुके हैं। थोथा उपदेश, कर्मकाण्ड, प्रदर्शन, स्वांग, शब्द जाल, तर्कशास्त्र और अन्धविश्वास से लोग पूर्ण रूप से निरुत्साहित हो चुके हैं। इसके विपरीत जिन-जिन देशों ने वैज्ञानिक उन्नति की है, वहाँ अशान्ति अहिंसा के ताण्डव नृत्य ने लोगों को भयभीत कर दिया है।

अतः उनको भी इस पथ के अलावा शान्ति प्राप्त करने का दूसरा रास्ता खोजना पड़ रहा है।

अमेरिका में प्रवचन देते हुए श्रद्धेय स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था - ''विभिन्न मतमतान्तरों या सिद्धान्तों पर विश्वास करने के प्रयत्न हिन्दू धर्म में नहीं हैं, वरन् हिन्दू धर्म तो प्रत्यक्षानुभूतियों और साक्षात्कार का धर्म है। केवल विश्वास का धर्म, हिन्दू धर्म नहीं है। हिन्दू धर्म का मूलमंत्र तो 'मैं' आत्मा हूँ, यह विश्वास होना और तद्रुप बन जाना है।'' आज हमारे धर्म से प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार की बात पूर्णरूप से विदा हो चुकी है। यही धर्म का प्राण थी। अतः इसके अभाव में प्राणहीन धर्म मानव को कोई लाभ पहुँचाने की स्थिति में नहीं है।

''परिवर्तन'' प्रकृति का अटल सिद्धान्त है। कोई भी शक्ति इसे प्रभावित नहीं कर सकती है। यह क्रम अनादि काल से चलता आया है। अतः निराशा का कोई कारण नहीं। अंधेरे और प्रकाश का संघर्ष हमारे अन्दर अनादि काल से चला आ रहा है। रात्रि के देवता कभी नहीं चाहते कि प्रकाश हो परन्तु फिर भी रात और दिन का क्रम अनादि काल से चला आ रहा है। हमें खुले दिल से हमारी कमजोरी को स्वीकार करके आध्यात्मिक जगत् में शोध कार्य प्रारम्भ करने चाहिए, जिस प्रकार भौतिक विज्ञान तत्काल परिणाम देना प्रारम्भ कर देता है उसी प्रकार उसका जनक अध्यात्म विज्ञान भी परिणाम देता है।

इस जगत् के सभी सौदे नगद के हैं।

www.the-comforter.org

यहाँ उधार का काम ही नहीं। परिणाम के अभाव में ही लोग इससे विमुख हुए हैं। आध्यात्मिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान का जनक है। आज तक का सारा प्रकट संसार उसी परमसत्ता की देन है। पिता पुत्र में द्वेष कैसा? इस कृत्रिम द्वेष भाव ने ही संसार को आज की अशान्त स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। इसके बारे में महर्षि श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है:- "एक सम्पूर्ण आध्यात्मिक जीवन के लिए हर कार्य आवश्यक है"। अर्थात् जीवन का हर कार्य कमोवेश अध्यात्म से ओत-प्रोत है। वैदिक काल के बाद मनुष्य निरन्तर उस परमसत्ता से अलग हटता गया।

आज का मानव उस क्रमिक अलगाव की प्रक्रिया के कारण, उस परमसत्ता से सर्वाधिक दूरी पर आकर खड़ा हो गया है। कृत्रिम पतन के साथ हम लोगों ने 'इहलोक' के स्थान पर केवल 'परलोक' की तरफ ताकना प्रारम्भ कर दिया। समाज के आधे अंग-स्त्रियों को पंगु बना कर रख दिया। उसे आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुत कुछ बातों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। जगत् जननी के साथ इस अन्याय के कारण ही संसार आज इतना दुःखी है। स्त्री जाति का मां का स्वरूप, बहिन का स्वरूप, दादी का स्वरूप आदि सभी स्वरूप भूलकर उसको केवल भोग की वस्तु ही माना जा रहा है। संसार के मानव ने जगत् जननी की ऐसी दुर्गति कर दी कि उसे रसातल में पहुँचा दिया है। हमारे प्रायः सभी धर्मगुरुओं ने कंचन और कामिनी का जो स्वरूप बना डाला है, वही दुःखों का कारण है।

इसके अतिरिक्त आराधनाओं का ऐसा स्वरूप बना कर रख दिया कि जिसे स्त्रियाँ अपनी प्राकृतिक संरचना के कारण, करने में असमर्थ हैं। जब तक धर्म का असली स्वरूप प्रकट नहीं हो जाता, इस क्षेत्र में प्रगति और शान्ति असम्भव है।

श्री अरविन्द ने मृणालिनी देवी को पत्र लिखा था -"ईश्वर यदि है तो उनके अस्तित्व को अनुभव करने का, उनका

www.the-comforter.org

साक्षात्कार प्राप्त करने का कोई-न-कोई पथ होगा, वह पथ चाहे कितना भी दुर्गम क्यों न हो, उस पथ से जाने का मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया है। हिन्दू धर्म का कहना है कि अपने शरीर के, अपने भीतर ही वह पथ है। उस पर चलने के नियम भी दिखा दिये हैं। उन सबका पालन करना, मैंने प्रारम्भ कर दिया है। एक माह के अन्दर अनुभव कर सका हूँ कि हिन्दू धर्म की बात झूठी नहीं है। जिन जिन चिह्नों की बात कही गई है, मैं उन सब की उपलब्धि कर रहा हूँ।''

महर्षि अरविन्द के अनुसार उस पथ पर चलकर हर प्राणी सिद्धि प्राप्त कर सकता है। इस पथ पर चलने के अधिकारी स्त्री-पुरुष दोनों बराबर के हकदार हैं। मेरी प्रत्यक्षानुभूतियों के अनुसार भी एक मात्र यही रास्ता है। जिस पर चलने से ही उस परमधाम तक की यात्रा सम्भव है।

संसार के प्रायः सभी धर्म संसार की उत्पत्ति 'शब्द' से मानते हैं। इस सम्बन्ध में वेद स्पष्ट कहता है- आओ उस ज्योति में पहुँचे जो स्वर लोक की है, उस ज्योति में जिसे कोई खण्ड खण्ड नहीं कर सकता। वेद स्पष्ट कहता है कि जिस ज्ञान को (आनन्द को) तामसिक वृत्तियों ने कैद कर रखा है, उसकी मुक्ति केवल 'प्रकाशप्रद शब्द' से ही सम्भव है। वेद बारम्बार उस प्रकाशप्रद शब्द से जो दिव्य प्रकाश निकलता है, उससे मिलने वाले दिव्य आनन्द की

www.the-comforter.org

प्रार्थना करता है। इस सम्बन्ध में महर्षि अरविन्द ने वेद रहस्य में लिखा है :- वैदिक द्रष्टाओं ने प्रेम पर ऊर्ध्व से अर्थात् इसके स्रोत और मूल स्थान से दृष्टिपात किया और उन्होंने अपनी मानवता में उसे दिव्य आनन्द के प्रवाह के रूप में देखा और ग्रहण किया। मित्र देव के इस आध्यात्मिक वैश्व आनन्द को वैदान्तिक आनन्द अर्थात् वैदिक मयस् की व्याख्या करती हुई तैत्तिरीय उपनिषद् इसके विषय में कहता है कि "प्रेम इसके शीर्ष स्थान पर है।" परन्तु प्रेम के लिए वह जिस शब्द 'प्रियम्' को पसंद करती है, उसका ठीक अर्थ है आत्मा के आंतरिक सुख और संतोष के विषयों की आनन्ददायकता। वैदिक गायकों ने इसी मनोवैज्ञानिक तत्त्व का उपयोग किया है। उन्होंने मयस् और प्रयस् का जोड़ा बनाया है।

मयस् है सब विषयों से स्वतंत्र आन्तरिक आनन्द तत्त्व और प्रयस है पदार्थ और प्राणियों में आत्मा को मिलनेवाले हर्ष और सुख के रूप में उस आनन्द का बहि-प्रवाह। वैदिक सुख है यही दिव्य आनन्द जो अपने साथ पवित्र उपलब्धि का और सब पदार्थों में निष्कलंक सुख के अनुभव का वरदान लाता है। आज संसार से वह प्रकाशप्रद शब्द जिसके दिव्य प्रकाश से दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है, कहाँ चला गया।

जब तक हम संसार में इसकी भौतक रूप से प्रत्यक्षानुभूति नहीं करवा देते, काम चल ही नहीं सकता है। इस दिव्य आनन्द और शब्द के बारे में भगवान् ने गीता में स्पष्ट कहा है। शब्द से सृष्टि की रचना के सम्बन्ध में भगवान् ने 17वें अध्याय के 23वें श्लोक में कहा है:-

ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा।।

(हे अर्जुन!) "ॐ तत् सत् ऐसे (यह) तीन प्रकार का सच्चिदानन्द घन ब्रह्म का नाम कहा है। उसी से सृष्टि के आदिकाल में ब्राह्मण और वेद तथा यज्ञादिक रचे गये है।" इससे स्पष्ट होता है कि संसार की

www.the-comforter.org

उत्पति उसी प्रकाशप्रद शब्द (ईश्वर) से हुई है। उस शब्द से जो दिव्य आनन्द आता है, उस सम्बंध में भगवान् ने गीता के पांचवें अध्याय के 21वें श्लोक तथा छठे अध्याय के 21वें, 27वें तथा 28वें श्लोक में कहा है:-

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते ।। 5:21

बाहर के विषयों में आसक्ति रहित अन्तःकरण वाला पुरुष अन्तः करण में जो भगवत् ध्यान जनित आनन्द है, उसको प्राप्त होता है। वह पुरुष सच्चिदानन्द घन परब्रह्म परमात्मारूप योग में एकीभाव से स्थित हुआ, अक्षय आनन्द को अनुभव करता है।

सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्।
वेत्ति यत्र न चौवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः ।। 6:21

"इन्द्रियों से अतीत केवल शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धि द्वारा ग्रहण करने योग्य जो अनन्त आनन्द है, उसको जिस अवस्था में अनुभव करता है और जिस अवस्था में स्थित हुआ यह योगी भगवत्स्वरूप से नहीं चलायमान होता है।"

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम्।
उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ।। 6:27

क्योंकि जिसका मन अच्छी प्रकार शान्त है (और) जो पाप से रहित है और जिसका रजोगुण शान्त हो गया है, ऐसे इस सच्चिदानन्दघन ब्रह्म के साथ एकीभाव हुए योगी को अति उत्तम आनन्द प्राप्त होता है।

युन्जन्नेवं सदाऽऽत्मानं योगी विगतकल्मषः।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते ।। 6.28

"पाप रहित योगी इस प्रकार निरंतर आत्मा को (परमात्मा में) लगाता हुआ, सुखापूर्वक परब्रह्म परमात्मा की प्राप्तिरूप अनन्त आनन्द को अनुभव करता है।"

आज वह आनन्द कहाँ चला गया? गीता के उपदेशक और व्याख्याता त्याग, तपस्या, दान, पुण्य, स्वर्ग, नरक का उपदेश दे रहे हैं। इस मूल तत्त्व की अनुभूति क्यों नहीं करवा रहे हैं? गीता के उपदेश को अर्जुन से अधिक कोई नहीं

www.the-comforter.org

समझ सकता है। उसने उपदेश सुनने के बाद जो कुछ किया, गीता हमें वही दर्शाती है। अर्जुन ने कौन सा दान-पुण्य, त्याग, तपस्या गीता का उपदेश सुनने के बाद किया?

वैदिक मनोविज्ञान (अध्यात्म विज्ञान) के अनुसार मनुष्य सात तत्त्वों से संघटित है, जिसके कोशों में आत्मा अन्तर्निहित है। वे हैं :- 1. अन्नमय कोश 2. प्राणमयकोश 3. मनोमयकोश 4. विज्ञानमय कोश 5. आनन्दमयकोश 6. चित्मय कोश और 7. सत्मयकोश। अन्न से लेकर विज्ञान तक चार तत्त्व भौतिक सत्ता से सम्बन्धित हैं और आनन्द से सत् तक तीनों उस परम सत्ता (सत्+ चित्+ आनन्द) सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मा से सम्बन्धित हैं। हिन्दू दर्शन के अनुसार मूलाधार से लेकर आज्ञाचक्र तक माया का क्षेत्र है। यानि अन्नमय कोश से विज्ञानमयकोश तक माया का क्षेत्र है। इसके ऊपर के तीन लोक सत्य लोक, अलख लोक और अगम लोक उस परम सत्ता (सत्+चित्+आनन्द) के लोक हैं। आज्ञाचक्र को भेदकर ऊपर उठते ही जीवात्मा माया के क्षेत्र से निकल कर आनन्दमय कोश में प्रवेश कर जाता है। इसके साथ ही गीता और वेद में वर्णित अक्षय आन्तरिक दिव्य आनन्द की अनुभूति मनुष्य को होने लगती है। मेरे संत सद्गुरुदेव ने उस आनन्द को धरा पर अवतरित कर दिया है। उन्हीं की कृपा से, मैं उसकी प्रत्यक्ष रूप में अनुभूति कर रहा हूँ। आध्यात्मिक दृष्टि से मुझसे जुड़ने वाले लोगों को भी इसकी प्रत्यक्षानुभूतियाँ हो रही हैं, जो कि भौतिक जगत् में सत्यापित हो रही हैं।

इस सम्बन्ध में ईसाइयों का पवित्र धार्मिक ग्रन्थ बाइबिल भी वही कहता है जो हमारे ग्रंथ कहते हैं। संसार की उत्त्पति के बारे में बाइबिल के संत जोहन 1:1 से चार में कहा है :-''आदि में शब्द था, और शब्द परमेश्वर के साथ था, और शब्द परमेश्वर था यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न

www.the-comforter.org

हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।

वेद और गीता में वर्णित अक्षय दिव्य आन्तरिक आनन्द के बारे में बाइबिल में भजन संहिता 23 : 5 में कहा हैः- "यह एक आन्तरिक आनन्द है जो सभी सच्चे विश्वासियों के हृदय में आता है। यह आनन्द हृदय में बना रहता है। सांसारिक आनन्द के समान यह आता-जाता नहीं है। उसका आनन्द पूर्ण है। वह हमारे हृदय के कटोरों को आनन्द से तब तक भरता है जब तक उमड़ न जाय। प्रभु का आनन्द जो हमारे हृदयों में बहता है, हमारे हृदयों से उमड़कर दूसरों तक बह सकता है।"

आज संसार से वह दिव्य आनन्द और दिव्य प्रकाश कहाँ चला गया? सभी धर्म जिस शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति मानते हैं, उसकी प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार असम्भव क्यों हो गया है? संसार यथा स्थिति चल रहा है। चारों कोश तो उपलब्ध हैं परन्तु तीन कोश (सत्+चित+आनन्द) गुम हो चुके हैं।

जब तक उनकी उपलब्धि आम मानव के लिए सुलभ नहीं हो जाती है, विद्या पर अविद्या का अधिकार रहेगा। भौतिक विज्ञान तामसिक वृत्तियों के अधीन रहकर उनके आदेश का पालन करेगा। जिस दिन भौतिक विज्ञान अपने जनक अध्यात्म विज्ञान के आदेश पर चलने लगेगा, महर्षि अरविन्द के शब्दों में "धरा पर स्वर्ग उतर आवेगा।"

हमारे सभी संतों ने हरिनाम की महिमा गाई है। भगवान् ने भी गीता में अपनी विभूतियों का वर्णन करते हुए 10 वें अध्याय के 25वें श्लोक में जपयज्ञ (नामजप) को सर्वोत्तम यज्ञ बताते हुए अपनी विभूति बताया है। बंगाल में जन्मे महान् आत्मा चैतन्य महाप्रभु, प्रभु जगद्बन्धु, रामकृष्ण परमहंस, तथा संत सद्गुरु नानक देव जी तथा संत कबीर आदि सभी संतों ने हरि नाम को ही मोक्ष का साधन बताया है। संत सद्गुरुदेव

www.the-comforter.org

नानक देव जी ने नाम की महिमा गाते हुए कहा है:-

"भांग-धतूरा नानका, उतर जाय परभात।
नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात।।"

संत कबीर ने एक कदम और आगे बढ़कर हरिनाम की महिमा गाते हुए कहा है-

नाम अमल उतरै न भाई। और अमल छिन-छिन
चढ़ि उतरै नाम अमल दिन बढ़े सवायो।

जिस मयस्(दिव्य आनन्द)की बात वेद करता है, जिसका गुणगान बाइबिल में है, जिस अक्षय आनन्द की बात भगवान् ने गीता में की है, जिस नाम खुमारी और नाम अमल की बात सभी संतों ने की है, उसको प्राप्त करना ही आध्यात्मिक आराधना का उद्देश्य है। इसके अलावा सब आराधनाएँ त्रिगुणमयी माया के प्रभाव क्षेत्र की हैं।

स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने एक कदम और आगे बढ़कर कह डाला - "अनुभूति- अनुभूति की यह महती शक्ति मय वाणी भारत के ही आध्यात्मिक गगन मण्डल से आविर्भूत हुई है। एक मात्र हमारा वैदिक धर्म ही है जो बारम्बार कहता है, ईश्वर के दर्शन करने होंगे, उसकी प्रत्यक्षानुभूति करनी होगी, तभी मुक्ति सम्भव है। तोते की तरह कुछ शब्द रट लेने से काम चल ही नहीं सकता है।" स्वामी जी ने यह बात अनायास ही नहीं कही है। वे भविष्य दृष्टा थे। उन्हें बहुत अच्छी प्रकार ज्ञान था कि भारत आगे चलकर संसार में इन तथ्यों को सत्यापित करेगा। संतों की वाणी निरर्थक नहीं होती है। युग के गुणधर्म के कारण तामसिक वृत्तियों की प्रधानता होने से उस समय लोग उसे समझ नहीं पाते हैं। महर्षि अरविन्द ने इस सम्बन्ध में जो घोषणा की है, वह पहले के संतों की बातों को प्रमाणित करती है।

महर्षि अरविन्द ने उस परमतत्त्व को धरा पर अवतरित कराने के लिए अपने अमूल्य जीवन की आहुति दे डाली। वे अपने जीवन में ही सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच गये थे। उस परमतत्त्व के

www.the-comforter.org

धरा पर अवतरित होने के बरे में उन्होंने घोषणा की है –

"24 नवम्बर 1926 को श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं। श्रीकृष्ण के अवतरण का अर्थ है, अधिमानसिक देव का अवतरण जो जगत् को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता है। श्रीकृष्ण आनन्दमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्‌बुद्ध करके विकास के मार्ग का समर्थन और संचालन करते हैं।"

उपर्युक्त भविष्यवाणी नहीं है। एक सच्चाई के अवतरित होने की घोषणा है। श्री अरविन्द के अनुसार वह परमसत्ता अपने क्रमिक विकास के साथ सारे संसार को आकर्षित करने लगेगी। मेरी प्रत्यक्षानुभूति के अनुसार वह सत्ता 1982 के प्रारम्भ से प्रकट होना प्रारम्भ कर देगी। 1992 तक वह भारत में काफी फैल जायेगी और आगे के तीन वर्षों में पूरे संसार में फैल जावेगी।

क्योंकि अध्यात्म ज्ञान प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है, इसमें उपदेश या ग्रन्थ अधिक सहायक सिद्ध नहीं हो सकते। मुझे जो कुछ भी मिला उसमें उपदेश या ग्रन्थ का एक प्रतिशत भी सहयोग नहीं रहा है। संत सद्‌गुरुदेव निराकार ब्रह्म के साकार स्वरूप होते हैं। उनकी कृपा के बिना इस जगत् (अध्यात्म जगत्) में प्रवेश असम्भव है।

www.the-comforter.org

मुझे सन् 1967 से 1982 तक विभिन्न प्रकार की आराधनाएँ मजबूरी में फँसकर करनी पड़ीं। आज तक जितनी आराधनाएँ, मैंने की और जो अब कर रहा हूँ, वह सब परिस्थितियों वश करनी पड़ रही हैं। प्रत्येक का नया परिणाम मिल रहा है।

ईश्वर कृपा और गुरुदेव के आशीर्वाद के कारण पग-पग पर दिशा निर्देश और पथ प्रदर्शन मिल रहा है।

मैं एक साधारण गृहस्थी प्राणी हूँ। मेरे जैसे नाचीज के माध्यम से यह सब होना

अपने आप में एक आश्चर्य और विचित्र बात है। मैं भी रजोगुण से अत्यधिक प्रभावित प्राणी हूँ। आज भी वह वृत्ति मुझे रह रह कर अपनी तरफ आकर्षित करती है। परन्तु मैं अनुभव कर रहा हूँ कि कोई अदृश्य शक्ति मुझे एक कदम भी उस वृत्ति की तरफ नहीं बढ़ने दे रही है।

अतः मेरे माध्यम से जो शक्ति प्रकट हो रही है, उसमें मेरी बुद्धि से किया हुआ कुछ भी प्रयास नहीं है। इस सम्बन्ध में मुझे किसी प्रकार का भ्रम नहीं है। जो कुछ हो रहा है, वह मेरे असंख्य गुरुओं की आराधना का फल है। मुझे मेरे परमदयालु संत सद्गुरुदेव की अहैतु की कृपा के कारण यह सब अनायास ही प्राप्त हो गया। मैं तो मात्र गुरु कृपा का प्रसाद बाँटने संसार में अकेला ही निकल पड़ा हूँ। मैं अच्छी प्रकार जानता हूँ कि मैं कर्ता नही हूँ। इसलिए मुझे किसी प्रकार की निराशा भी नहीं होती। घाटे-नफे का अधिकारी तो वही जगत् सेठ है, मैं तो मात्र अपनी मजदूरी का अधिकारी हूँ।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

3 दिसम्बर, 1988

www.the-comforter.org

भागवत शक्ति का अवतरण

हमारे वेद स्पष्ट बताते हैं कि ''एक मात्र भारत ही ऐसा भूखण्ड है, जिसके वायु मण्डल में आध्यात्मिक चेतन शक्तियाँ निरन्तर भ्रमण करती हैं।'' यह बात सत्य है कि संसार से अध्यात्म चेतना प्रायः समाप्त हो चुकी है, केवल दिखावा मात्र बाकी बचा है, परन्तु उस चेतना का अन्तिम बीज आज भी भारत की भूमि में ही छिपा हुआ है। यह सत्य है कि हमारे देश में भी संसार के साथ-साथ, इस चेतना का भारी ह्रास हुआ है, परन्तु एक चिंगारी आज भी मौजूद है, जिसको प्रज्वलित करके सारे संसार को प्रकाशमय किया जा सकता है।

–संदर्भ 'आध्यात्मिक आराधना' का समय और आवश्यकता।

(समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के कर कमलों द्वारा लिखित)

योग में ही आदि और अंत

कठोपनिषद् इस प्रकार के शक्तिशाली और सारगर्भित वचनों से गुथा हुआ है जिनमें शब्द के एक बिन्दु भर स्थान में अर्थ का ब्रह्माण्ड भरा है। इस तरह का एक काव्य है- 'योगो हि प्रभवाप्ययौ'। योग ही वस्तुओं का आरम्भ और अंत है। पुराणों में इस वचन पर बल दिया है और उसे विकसित किया है। भगवान् ने योग से सृष्टि की रचना की और अन्त में योग द्वारा ही वे उसे अपने अंदर खींच लेंगे।लेकिन केवल विश्व की मौलिक रचना और उसका अन्तिम विलय नहीं बल्कि वस्तुओं के सभी महान् परिवर्तन, सृजन, विकास, विनाश भी योग की तात्त्विक प्रक्रिया, तपस्या द्वारा संपादित होते हैं।

-संदर्भ-श्री अरविन्द (पुस्तक- मानव से अतिमानव की ओर)

गतांक से आगे...

स्वर्णमयी भारत के बढ़ते कदम

श्री अरविन्द आश्रम से प्रकाशित पुस्तक –''भारत का पुनर्जन्म'' में विषद वर्णन किया है कि किस प्रकार विदेशी आतताईयों व भारत के भीतर सत्ता लोलुप लोगों ने इस देश का शोषण किया, लूटा और अब कल्कि के आगमन से किस प्रकार देश अपने उदीयमान आलोक से वापस विश्व गुरु बनेगा और पूरे विश्व को शांति का पैगाम देगा। साधकों के ज्ञान बोध के लिए क्रमशः हर अंक में कुछ जानकारियाँ वर्णित की जाएंगी।

(१९०० से आगे श्री अरविन्द ने महाराष्ट्र और बंगाल के क्रांतिकारी दलों से संपर्क करना प्रारंभ किया और अपने भाई बारीन्द्र कुमार घोष और जतींद्रनाथ बनर्जी के सहयोग से उनके कार्य को समन्वित करने का प्रयास किया; श्री अरविन्द की प्रेरणा से पी. मित्तर, सुरेंद्रनाथ टैगोर, चित्तरंजन दास और सिस्टर निवेदिता के बंगाल में क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए पहली गुप्त परिषद शीघ्र ही गठित कर ली। यद्यपि विभिन्न दलों के बीच प्रभावकारी समन्वय का उद्देश्य पूरी तरह कारगर नहीं हो सका तो भी उनमें से कुछ ने, जैसे पी. मित्तर की अनुशीलन समिति ने राष्ट्रीय आदर्श के प्रचार–प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। उनका प्रमुख अस्त्र था अनेक शहरों और गाँवों में ऐसे केंद्रों की स्थापना करना जहाँ नवयुवकों को बौद्धिक, नैतिक और शारीरिक प्रशिक्षण दिया जाता और उन्हें भारत की स्वतंत्रता के लिए कार्य करने हेतु प्रेरित किया जाता।

लगभग इसी समय श्री अरविन्द ने एक पेम्फलेट भवानी मंदिर लिखी जिसका उद्देश्य था 'देश की क्रांतिकारी तैयारी'। इसकी हजारों प्रतियाँ गुप्त रूप से वितरित की गई। कुछ उद्धरण)

पुरातन माता, भारत वास्तव में पुनर्जन्म लेने का प्रयास कर रही है,

असह्य वेदना और आँखों में आँसू लिये हुए प्रयास कर रही है, पर उसका प्रयास सफल नहीं हो पा रहा। उसे कठिनाई किस बात की है, इतनी विशाल होते हुए वह उतनी सशक्त भी होगी ही ? अवश्य ही कोई भारी दोष होगा, हममें कुछ महत्त्वपूर्ण कमी है, ऐसा भी नहीं कि उस स्थल पर अपनी उंगली रखना कठिन हो। हमारे पास बाकी सारी चीजें हैं, बस शक्ति-शून्य हैं, ऊर्जा का अभाव है। हमने शक्ति को त्याग दिया और इसीलिए हम शक्ति द्वारा त्याग दिये गये। हमारी माता हमारे अंतःकरणों में, हमारे मस्तिष्कों में, हमारी भुजाओं में नहीं है।

पुनर्जन्म लेने की अभिलाषा हम में प्रचुर परिमाण में विद्यमान है, इसमें कोई कमी नहीं है। कितने-कितने प्रयास किये गये, धर्म के, समाज के और राजनीति के क्षेत्र में कितने आंदोलनों को प्रारंभ किया गया पर सबको एक ही नियति ने आ घेरा या घेरने की तैयारी कर रही है। एक क्षण के लिए वे उभरते हैं, तब आवेग ढीला पड़ जाता है, आग बुझ जाती है, और यदि वे टिके रह जाते हैं तो

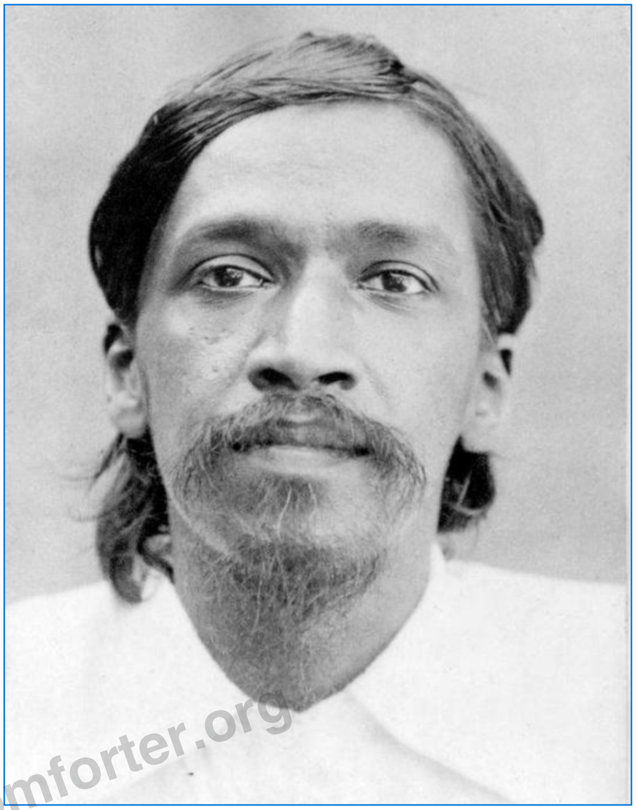

www.the-comforter.org

बस रीते घोंघों जैसे, उन आकृतियों जैसे, जिनमें से ब्रह्म तिरोहित हो चुका है। अथवा जिनमें उसे तमस और निष्क्रियता ने दबा रखा है। हमारे प्रारंभ सशक्त होते हैं पर न तो उनकी परिणति होती है और न वे प्रतिफलित होते हैं।

अब हम एक अन्य दिशा में पहल करने जा रहे हैं। हमने एक महान्

औद्योगिक आंदोलन प्रारंभ किया है, जो एक दरिद्र भूमि को धनवान बनाकर उसे नवजीवन प्रदान करेगा। अनुभव से कुछ न सीखकर हम यह नहीं समझ रहे हैं कि इस आंदोलन की भी वही गति होनी है जो और सभी की हुई, जब तक कि हम उस एक महत्त्वपूर्ण वस्तु को पाने का प्रयास नहीं करते, जब तक हम शक्ति प्राप्त नहीं कर लेते।

क्या वह ज्ञान है जिसका अभाव है? हम भारतीय ऐसे देश में जन्मे और पालित-पोषित हुए हैं जहाँ मानवजाति के प्रारंभ से ही ज्ञान का भंडार भरता और उत्तरोत्तर संचित होता रहा है, हमारे भीतर अनेक सहस्र वर्षों की परंपरागत निधि उपलब्ध है। पर वह एक जड़ ज्ञान है, एक बोझ जिसके तले हम दबे जा रहे हैं, एक विष जो हमें खाये जा रहा है, बजाय इसके कि एक लाठी की भांति वह हमारे पैरों को सहारा देता और हमारे हाथों में एक अस्त्र का काम देता, जैसा कि होना चाहिए था। सभी महान् वस्तुओं का स्वभाव ही यही है, कि जब उनका उपयोग नहीं किया जाता अथवा गलत उपयोग किया जाता है तो वे धारण करने वाले पर ही उलट पड़ती हैं और उसे नष्ट कर देती हैं।

क्या प्रेम, उत्साह, भक्ति का अभाव है? ये सब तो भारतीय स्वभाव में ही अंतर्निहित हैं, किंतु शक्ति के न होने से हम ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते, हम निर्देश नहीं कर सकते, हम उसे सुरक्षित तक नहीं रख सकते। भक्ति ऊपर उठने वाली लौ है, शक्ति ईंधन है। यदि ईंधन की कमी है तो आग कितनी देर ठहर सकेगी?

जितनी गहराई से हम देखेंगे, उतने ही हम इस बात से कायल होंगे कि एक ही चीज है जिसकी कमी है, और सबसे पहले जिसे प्राप्त करने का प्रयास करना नितांत आवश्यक है, वह है शक्ति – शारीरिक शक्ति, मानसिक शक्ति, नैतिक शक्ति, पर सबसे ऊपर आध्यात्मिक शक्ति, जो कि अन्य सभी का एक ही अनंत और शाश्वत स्रोत है।

यदि हमारे पास शक्ति है तो बाकी सब कुछ सरलता से स्वाभाविक रूप से हमारे पास आ जायेगा। शक्ति के अभाव में हमारी स्थिति स्वप्न देखने वाले व्यक्तियों जैसी है, जिनके हाथ होते हुए भी वे न पकड़ सकते हैं, न वार कर सकते हैं, जिनके पैर तो हैं, पर वे भाग नहीं सकते।

यदि भारत को अपना अस्तित्व बनाये रखना है तो उसे फिर से युवा बनाना होगा। ऊर्जा के धाराप्रवाह तरंगायित स्रोत उसमें उड़ेलने होंगे; उसकी आत्मा को फिर से वैसी ही बनना होगा जैसी वह पुरातन काल में थी, लहरों जैसी विशाल, शक्ति शाली, इच्छानुसार शांत अथवा विक्षुब्ध, कर्म अथवा बल का एक महासागर।

हममें से बहुत-से, जिन्हें निष्क्रियता के अंधकारमय भारी राक्षस तमस् ने पूरी तरह दबोच रखा है, आजकल यह कहने लगे हैं कि यह असंभव है, कि भारत क्षीण, रक्त हीन और प्राणहीन हो चुका है, इतना कमजोर कि फिर कभी उबर नहीं सकता; कि हमारी जाति की नियति अब मिट जाना है। ऐसा कहना मूर्खतापूर्ण और काहिलियत है। किसी भी व्यक्ति को अथवा राष्ट्र को, यदि वह स्वयं नहीं चाहता तो कमजोर होना जरूरी नहीं, और न किसी व्यक्ति अथवा राष्ट्र का, यदि वह जान-बूझकर मिटना नहीं चाहता तो, नष्ट होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि राष्ट्र है क्या ? हमारी मातृभूमि क्या है ? वह एक भूमि का टुकड़ा ही तो नहीं है, न वाणी का एक अलंकार है और न मस्तिष्क की कल्पना की एक उड़ान मात्र है। वह एक महान शक्ति है, जिसका निर्माण उन करोड़ों एककों की शक्तियों को मिलाकर हुआ है जो राष्ट्र का निर्माण करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे सारे करोड़ों देवताओं की शक्ति को एकत्र कर एक बलराशि संचित की गई और उसे परस्पर जोड़ कर एकता स्थापित की गई जिसमें से भवानी महिष-मर्दिनी प्रकट हुई। वह शक्ति जिसे हम भारत, भवानी

www.the-comforter.org

भारती कहकर पुकारते हैं, तीस करोड़ लोगों की शक्तियों की जीती-जागती एकता है, पर वह निष्क्रिय है, तमस् के इंद्रजाल में बंदी होकर, अपने पुत्रों की आत्मासक्त क्रियाहीनता और अज्ञानता के वशीभूत होकर।

हमें शक्ति का सृजन वहाँ करना है, जहाँ वह पहले नहीं थी; हमें अपने स्वभावों को बदलना है, और नये हृदयों के साथ नये मानव बनना है, फिर से जन्म लेना है। हमें बीजरूप में ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जिनमें शक्ति का अधिकतम सीमा तक विकास किया जा सके, जिनके व्यक्तित्व के कोने-कोने में उसे भरा जा सके और जो छलक कर भूमि को उर्वर बनाये। भवानी की ज्वाला को अपने अंतःकरणों और मस्तिष्कों में धारण कर ये लोग जब निकल पड़ेंगे तो अपनी भूमि के हर कोने और कंदरा में वे उस ज्योति को ले जायेंगे।

(उस पत्र से उद्धृत जो श्री अरविंद ने बंगाली में अपनी पत्नी मृणालिनी देवी को लिखा था, जिसमें उन्होंने उन्हें अपने देश की स्वतंत्रता के लिए काम करने का आह्वान् समझाने का प्रयास किया था, जिसे वे महसूस कर रहे थे; कुछ वर्षों बाद पुलिस ने यह पत्र जब्त कर लिया था और अलीपुर बम के मामले में सबूत के रूप में पेश किया था।)

अगस्त ३०, १९०५

जब कि और लोग अपने देश को एक जड़ पदार्थ का टुकड़ा समझते हैं - थोड़े-से चरागाह और खेत, वन और पहाड़ियाँ और नदियाँ - मैं अपने देश को अपनी माता मानता हूँ। मैं उसकी आराधना करता हूँ, माता के रूप में उसकी पूजा करता हूँ। यदि एक राक्षस एक पुत्र की माता की छाती पर चढ़कर उसका खून चूसने लगे तो वह क्या करेगा ? मैं यह जानता हूँ कि मुझमें इस गिरी हई कौम को उबारने की ताकत है। शारीरिक शक्ति की बात नहीं - मैं कोई तलवार या बंदूक उठाकर लड़ने नहीं जा रहा - पर ज्ञान की शक्ति

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

अक्टूबर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

09 अक्टूबर, 2021 कोटा जिले में राजकीय देवनारायण महिला छात्रावास में सिद्धयोग कार्यक्रम।

10 अक्टूबर, 2021 कोटा स्थित पालीवाल छात्रावास परिसर में सिद्धयोग कार्यक्रम

10 अक्टूबर, 2021 कोटा स्थित बैरवा समाज छात्रावास परिसर में सिद्धयोग कार्यक्रम

अक्टूबर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

10 अक्टूबर, 2021 कोटा स्थित सैनी समाज छात्रावास परिसर में सिद्धयोग कार्यक्रम

11 अक्टूबर, 2021 कोटा स्थित सुधा नर्सिंग कॉलेज में सिद्धयोग कार्यक्रम

15 अक्टूबर, 2021 उदयपुर स्थित कैथोलिक चर्च में आशा धाम आश्रम में सिद्धयोग कार्यक्रम

अक्टूबर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

15 अक्टूबर, 2021 उदयपुर स्थित तारा संस्थान के आनंद वृद्धा आश्रम एवं राजकीय नारी निकेतन में सिद्धयोग कार्यक्रम।

17 अक्टूबर, 2021 कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, मोकलसर, बाड़मेर में सिद्धयोग कार्यक्रम।

21 अक्टूबर, 2021 को स्काउट और गाइड का युवा दल अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर आश्रम पहुँचा और गुरुदेव सियाग सिद्धयोग दर्शन की जानकारी प्राप्त की।

अक्टूबर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

21 अक्टूबर, 2021 कोटा स्थित राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय सकतपुरा में सिद्धयोग कार्यक्रम।

25 अक्टूबर, 2021 कोटा स्थित स्प्रिंगडेल्स स्कूल में सिद्धयोग कार्यक्रम।

26 अक्टूबर, 2021 कोटा स्थित Lzebra स्कूल में सिद्धयोग कार्यक्रम

अक्टूबर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

27 अक्टूबर, 2021 कोटा स्थित हितकारी बीएड कॉलेज में सिद्धयोग कार्यक्रम।

27 अक्टूबर, 2021 कोटा स्थित भारत विकास परिषद् द्वारा संचालित माधव नर्सिंग कॉलेज में सिद्धयोग कार्यक्रम

गतांक से आगे...

साधना विषयक बातें

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग पर चलने में सहायता मिल सके।

पहले जो अवस्था थी या जो प्राप्त किया था वह सब नष्ट नहीं हुआ, नष्ट होगा भी नहीं लेकिन तुम्हारी अशांति और असावधानता से पर्दा पड़ गया था। शांत और सचेतन होते ही सब लौट आता है। वही अभी हो रहा है। अब पहले की तरह साधना करो-फिर से द्रुत उन्नति होगी।

जब ऊर्ध्व चेतना की अवस्था के बदले निम्न चेतना की अवस्था आती है और ऐसा सभी साधकों के साथ होता है-तब अपने को शांत रखकर शक्ति को पुकारना चाहिये और जब तक ऊर्ध्व अवस्था वापिस नहीं आ जाती, अपने को खुला रखना चाहिये। निम्न अवस्था स्थायी नहीं हो सकती, अच्छी अवस्था आयेगी ही आयेगी। ऐसा करने से प्रत्येक बार निम्न प्रकृति की कुछ उन्नति होती है, एक भाग-जो पहले खुला नहीं था-खुल जाता है-अंत में सब खुल जायेगा और सब ऊर्ध्व चेतनामयी अवस्था में स्थायी भाव से रहने लगेगा।

www.the-comforter.org

शक्ति ने तुम्हें छोड़ नहीं दिया है और छोड़ेंगी भी नहीं। क्योंकि यह बाधा शरीर-चेतना में आयी है इसीलिये वहाँ ठिठक गयी है, बहुतों के साथ ऐसा हुआ है। यह चिरस्थायी नहीं होती। बाधा होते हुए भी धौर्यपूर्वक चलो-अच्छी अवस्था आयेगी।

'त' के बारे में मैंने तुम्हें पहले ही सावधान कर दिया था और इन सबमें न उलझ शक्ति का काम, शक्ति के लिये ही करने को कहा था, तुमने भी अपनी सहमति जतायी थी। इसके अलावा इन सबको सहन करना न सीखने से साधक में उचित समता कहाँ से आयेगी?

अप्रिय व्यवहार, अप्रिय बात, अप्रिय घटना- ये सभी साधक को भगवान् के प्रति एकनिष्ठ और जगत् की सब घटनाओं में अविचल रहने की अवसर प्रदान करती हैं। और सब जो लिखा है उसका निदान रोना-कलपना नहीं है, निदान है अपने चैत्य में वास कर, शक्ति पर निर्भर कर अग्रसर होना, इससे सब कठिनाइयाँ, सब अपूर्णताएँ चुपचाप कम हो जायेंगी, विनष्ट हो जायेंगी। तुम्हारी अच्छी अवस्था लौट आयी है, जानकर राहत मिली। वह अवस्था अचल बनी रहे !

जब प्राण में और गड़बड़ नहीं रहेगी, शरीर में जब शांति पूर्णतया और हर समय रहेगी तब शरीर की ये सब गड़बड़ियाँ और नहीं टिकेंगी।

प्रश्नः- आज कुछ दिन से निम्न प्रकृति से उठी असंख्य बाधाएँ मुझे ग्रस रही हैं, अधिकार जमाना चाह रही हैं। किंतु इस सबके होते हुए भी अपने हृदय में तुम्हारा स्मरण और तुम्हारे प्रति आत्म समर्पण करने की इच्छा और तुम्हारे लिये प्रेम अनुभव कर रही हूँ।

उत्तरः- : बाधाओं के होते हुए यदि वह भाव, वह स्मृति रख रही हो तो फिर चिंता करने की कोई बात ही नहीं

www.the-comforter.org

है, उसी से अंततः सब बाधाओं को अतिक्रम करके शक्ति की चेतना में स्थायी भाव से निवास करो।

ये सब तो हैं प्राण की तामसिक कल्पनाएँ, निम्न प्रकृति के सुझाव। विरोधी शक्तियाँ भी निराशा और दुर्बलता लाने के लिये इन सब अयोग्यताओं का और मरने का idea suggest करती हैं (विचार सुझाती हैं)।इन सब सुझावों को भीतर प्रवेश नहीं करने देना चाहिये।

कामावेग किस तरह उठ रहा है? साधारण भाव में या किसी के प्रति आकर्षण द्वारा? जैसे भी क्यों न उठे, उसे प्रश्रय न दे, उसका प्रत्याख्यान कर शक्ति को पुकारो, शक्ति को आधार में नीचे उतारो-फिर से सत्य चेतना आकर शरीर में स्थापित होगी।

प्रश्नः- सिर के ऊपर से कुछ अवतरण और दबाव का अनुभव कर रही हूँ, उस समय सिरदर्द क्यों होता है?

उत्तरः- उस सिरदर्द को तूल न दो। ऊपर की चीज उतरने पर वह दूर हो जाता है।

प्रश्नः- कल रात स्वप्न में अपनी पार्थिव मां को देखा। वे कह रही थीं, "अपने को संपूर्ण रूप से शक्ति को अर्पित कर साधना करो, मैं तुम्हारे रास्ते में और रोड़े नहीं अटकाऊंगी। तझे शक्ति मिल जायें तो मैं भी मुक्त हो जाऊंगी।"

उत्तरः- इस तरह के स्वप्नों में पार्थिव शक्ति physical nature (पार्थिव प्रकृति) की प्रतीक बनकर आती हैं। जिसने तुमसे यह बात कही वे तुम्हारी पार्थिव मां नहीं थीं, वह थी पार्थिव मां के रूप में पार्थिव प्रकृति।

प्रश्नः- आज से मैं धैर्यहीन, अशांत और अधीर नहीं होऊंगी और रुकावटें देख भयभीत नहीं होऊंगी...। अब जितने भी विरोध आयें शांत भाव से, गंभीर विश्वास के साथ तुम्हारी ओर मुंडूगी और उन्हें तुम्हारे पदकमलों में अर्पित कर दूंगी।

उत्तरः- यही है Right attitude

(उचित मनोभाव)। हमेशा यही मनोभाव रहना चाहिये, तभी शक्ति अंदर ही अंदर अवचेतना के क्षेत्र को रूपांतरित करने के लिये आसानी से काम कर सकेगी।

प्रश्नः-मैं उसे (एक बहुत शांत भाव) अनुभव कर रही हूँ लेकिन आँख से देख नहीं रही। वह रूपहीन क्यों है ?

उत्तरः- शांति का काम रूपहीनता में ही होता है।

प्रश्नः-मैं बीच-बीच में अपनी चेतना क्यों खो देती हूँ, यह खराब है या अच्छा। कुछ काम करते-करते देखती हूँ कि अचानक चेतना कहीं चली गयी, पुनः अपने आप लौट आती है।

उत्तरः-चेतना जब अंतर्मुखी होती है तब ऐसा होता है। खराब तो नहीं है पर हर काम के समय बहुत गहराई में न जाना ही अच्छा है।

प्रश्नः- मेरे अंदर एक भाव उठता है कि तुम मुझे बड़े-बड़े साधक-साधिकाओं की तरह पसंद नहीं करतीं, नहीं चाहतीं, नहीं देखती और अपना नहीं समझती।

उत्तरः- जो देख रही हो उसमें सच्चाई है। सिर्फ तुम्हारा ही नहीं, सारे आश्रम में यह भाव फैला हुआ है, बहुतों की साधना में विषम बाधाओं को जन्म दे रहा है। इसमें निहित है तामसिक अहंकार और क्षुद्र प्राण की माँग। इस भाव को कभी अपने अंदर जगह न दो। जो शक्ति से कुछ भी न मांग अपने को देता है वह शक्ति को संपूर्ण भाव से पाता है, शक्ति को पाने पर सब कुछ मिल जाता है, भागवत चेतना, शांति, विशालता, भागवत ज्ञान और प्रेम इत्यादि। लेकिन छोटी-छोटी मांगों को लेकर बैठ जाने से बाधा-ही-बाधा हाथ आती है।

प्रश्नः- दो-तीन दिन से मेरे सिर में दर्द हो रहा है...। लगता है सिर के ऊपर पहले की तरह बड़ा-सा कुछ धरा है।

www.the-comforter.org

और अब सिर से लेकर सारे शरीर तक में फैल रहा है।

उत्तरः- शायद इस 'बड़े-से कुछ के अवतरण के लिये शरीर में कोई कठिनाई है इसीलिये सिर में दर्द है। यदि ऐसा है तो मन को खूब शांत और विशाल कर के खोल देने से वह कठिनाई चली जाती है।

यही तो चाहिये-सारे स्तरों में चैत्य का प्रभाव और आधिपत्य। यह भी कितनी बार कहा है-शांत होकर अंतरस्थ रहो-जैसे ही सत्य की चेतना आती है, यह सब चंचलता सत्य को दूर भगा देती है, रह जाते हैं सिर्फ मिथ्यात्व निराशा इत्यादि। शक्ति के ऊपर निर्भर रह शांत चित्त बनी रहो, कठिनाइयाँ सबके जीवन में आती हैं, उनके रहते हुए भी स्थिर रहकर पथ पर बढ़ना होता है।

एक आवरण अभी भी है-संपूर्ण शक्ति अभी भी उतर सकती है।उसके बिना अनेक साधकों की अवस्था अधसोये जैसी है-पूरा-पूरा जागना नहीं चाहते।

हताश और दुःखी नहीं होते, रोना-धोना नहीं मचाते। शांत हो विचारों और अपने (दोष-त्रुटि) को सुधारो।

प्रश्नः- आज देखती हैं कि ऊपर से एक चक्र नाभि के निचले भाग में उतर रहा है।

उत्तरः- इसका अर्थ है शक्ति की क्रिया निम्न प्राण में उतर आयी है।

'क' को मिलने के बाद तुम्हारे जाग्रत् मन पर तो नहीं परंतु अवचेतना में सब पुरानी घटनाओं की छाप रह गयी-उसके ऊपर स्पर्श पड़ा था इसीलिये रात को ऐसा स्वप्न आया। अवचेतना की ये सब पुरानी यादें और छापें स्वप्न में प्रायः ही उभरकर आती हैं, उससे विचलित होने का कोई कारण नहीं। ये सब छापें धीरे-धीरे एक बार में ही पीछे छूट जायेंगी-तब ऐसा और नहीं होगा।

क्रमशः अगले अंक में...

अवतार का आगमन

www.the-comforter.org

"अवतार का आगमन मानव प्रकृति में भागवत प्रकृति को प्रकटाने के लिये होता है।" कृष्ण की भगवत्ता को प्रकटाने के लिए, जिससे मानव-प्रकृति अपने सिद्धांत, विचार, अनुभव, कर्म और सत्ता को ईसा और कृष्ण के सांचे में ढालकर स्वयं भागवत प्रकृति में रूपांतरित हो जाय।

-श्री अरविन्द (पुस्तक- गीता प्रबन्ध)

दिव्य जन्म और दिव्य कर्म

–श्री अरविन्द

भगवान् के जन्म की तरह उस कर्म का भी, जिसके लिये अवतार हुआ करता है, विविध भाव और द्विविध रूप होता है। क्रिया और प्रतिक्रिया के जिस विधान के द्वारा, उत्थान और पतनरूपी जिस सहज व्यवस्था के द्वारा प्रकृति अग्रसर होती है, उस विधान और व्यवस्था के होते हुए भागवत धर्म की रक्षा और पुनर्गठन के लिए इस बाह्य जगत् पर भागवत शक्ति की जो क्रिया होती है, वही दिव्य कर्म का बाह्य पहलू है, और यह भागवत धर्म ही मानव-जाति के भगवन्मुखी प्रयास को समस्त विघ्न-बाधाओं से उबारकर निश्चित रूप से आगे बढ़ाता है।

इसका आंतर पहलू यह है कि भगवन्मुख चैतन्य की दिव्य शक्ति व्यक्ति और जाति की आत्मा पर क्रिया करती है ताकि वह मानवरूप में अवतरित भगवान के नये-नये प्रकाश को ग्रहण कर सके और अपने ऊर्ध्वमुखी आत्म-विकास की शक्ति को बनाये रख सके, उसमें एक नवजीवन ला सके और उसे समृद्ध कर सके। अवतार का अवतरण केवल किसी महान् बाह्य कर्म के लिए नहीं होता जैसा कि मनुष्य की कर्म-प्रवण बुद्धि समझा करती है। कर्म और बाह्य घटना का अपने-आप में कोई मूल्य नहीं होता, उनका मूल्य उस शक्ति पर आश्रित है जिसकी ओर से वे होते हैं और उस भाव पर आश्रित है जिसके वे प्रतीक होते हैं और जिसे सिद्ध करना ही उस शक्ति का काम होता है।

जिस संकट की अवस्था में अवतार का आविर्भाव होता है वह बाहरी नजर को महज घटनाओं और जड़ जगत् के महत् परिवर्तनों का नाजुक काल प्रतीत होता है। परन्तु उसके स्रोत और वास्तविक अर्थ को

www.the-comforter.org

देखें तो यह संकट मानव चेतना में तब आता है जब उसका कोई महान परिवर्तन, कोई नवीन विकास होने वाला हो।इस परिवर्तन के लिये किसी दिव्य शक्ति की आवश्यकता होती है, किन्तु शक्ति जिस चेतना में काम करती है उसके बल के अनुसार बदलती है। इसलिए मानव-मन और अंतरात्मा में भागवत चैतन्य का आविर्भाव आवश्यक होता है। जहाँ मुख्यतः बौद्धिक और लौकिक परिवर्तन करना हो वहाँ अवतार के हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं होती; मानव-चेतना का उत्थान होता है, शक्ति की महान् अभिव्यक्ति होती है जिसके फलस्वरूप सामयिक तौर पर मनुष्य अपनी साधारण अवस्था से ऊपर उठ जाते हैं और चेतना और शक्ति की यह लहर कुछ असाधारण व्यक्तियों में तरंग-शृंग बन जाती है और इन्हीं असाधारण व्यक्तियों को विभूति कहते हैं। इन विभूतियों का काम सर्वसाधारण मानव जाति के कर्म का नेतृत्व करना है और यह उद्दिष्ट परिवर्तन के लिये पर्याप्त होता है। यूरोपीय पुनर्निर्माण और फ्रांस की राज्य-क्रांति इसी प्रकार के संकट थे। ये महान् आध्यात्मिक घटनाएँ नहीं, बल्कि बौद्धिक और लौकिक परिवर्तन थे। एक में धार्मिक तथा दूसरे में सामाजिक और राजनीतिक भावनाओं, रूपों और प्रेरकभावों का परिवर्तन हुआ और इसके फलस्वरूप जनसाधारण की चेतना में जो फेरफार हुआ वह बौद्धिक और लौकिक था, आध्यात्मिक नहीं। पर जब किसी संकट के मूल में कोई आध्यात्मिक बीज या हेतु होता है तब मानव-मन और आत्मा में प्रवर्तक और नेता के रूप से भागवत चैतन्य का पूर्ण या आंशिक प्रादुर्भाव होता है। यही अवतार है।

www.the-comforter.org

अवतार के बाह्य कर्म का वर्णन गीता में 'धर्मसंस्थापनार्थाय' कहकर किया गया है। जब-जब धर्म की ग्लानि या ह्रास होता है, उसका बल क्षीण हो जाता है और अधर्म सिर उठाता, प्रबल होता और अत्याचार करता है तब-तब अवतार आते और धर्म को फिर से शक्तिशाली बनाते हैं। जो बातें विचार के अंतर्गत होती हैं वे कर्म के द्वारा तथा विचारों की प्रेरणा का अनुगमन करने वाले मानव-प्राणी के द्वारा प्रकट होती हैं, इसलिए अत्यंत मानव और लौकिक भाषा में अवतार का काम है प्रतिगामी अंधकार के राज्य द्वारा सताये गये धर्म के अन्वेषाकों की रक्षा करना (परित्राणाय साधुनां) और अधर्म को बनाये रखने की इच्छा करने वाले दुष्टों का नाश करना। परन्तु इस बात को कहने में गीता ने जिन शब्दों का प्रयोग किया है उनकी ऐसी संकीर्ण और अधूरी व्याख्या भी की जा सकती है जिससे अवतार का आध्यात्मिक गंभीर अर्थ जाता रहे। धर्म एक ऐसा शब्द है जिसका नैतिक और व्यावहारिक, प्राकृतिक और दार्शनिक, धार्मिक और आध्यात्मिक, सभी प्रकार का अर्थ होता है और इनमें से किसी भी अर्थ में, इस शब्द का इस तरह से प्रयोग किया जा सकता है कि उसमें अन्य अर्थों की गुंजाइश न रहे। उदाहरणार्थ, इसका केवल नैतिक अथवा केवल दार्शनिक या केवल धार्मिक अर्थ किया जा सकता है। नैतिक रूप से सदाचार के नियम को, जीवनचर्या-संबंधी नैतिक विधान को अथवा और भी बाह्य और व्यावहारिक अर्थ में सामाजिक और राजनीतिक न्याय को या केवल सामाजिक नियमों के पालन को धर्म कहा जाता है। यदि हम इस शब्द को इसी अर्थ में ग्रहण करें तो इसका यही अभिप्राय हुआ कि जब अनाचार, अन्याय और दुराचार का

www.the-comforter.org

प्राबल्य होता है तब भगवान् अवतार लेकर सदाचारियों को बचाते और दुराचारियों को नष्ट करते हैं। अन्याय और अत्याचार को रौंद डालते और न्याय और सदव्यवहार को स्थापित करते हैं।

कृष्णावतार का प्रसिद्ध पौराणिक वर्णन इसी प्रकार का है- कौरवों का अत्याचार-दुर्योधनादि जिसके मूर्त रूप हैं, इतना बढ़ा कि पृथ्वी के लिए, उसका भार असह्य हो उठा और पृथ्वी को भगवान् से अवतार लेने और भार हल्का करने की प्रार्थना करनी पड़ी; तदनुसार विष्णु कृष्णरूप में अवतीर्ण हुए, उन्होंने अत्याचार-पीड़ित पांडवों का उद्धार और अन्यायी कौरवों का संहार किया। इसके पूर्व अन्यायी-अत्याचारी रावण का वध करने के लिए जो विष्णु का रामावतार अथवा क्षत्रियों की उद्दंडता को नष्ट करने के लिए परशुरामावतार या दैत्यराज बलि के राज्य को मिटाने के लिए वामनावतार हुआ उसका भी ऐसा ही वर्णन है। परन्तु यह प्रत्यक्ष है कि पुराणों के इस प्रसिद्ध वर्णन से कि अवतार इस प्रकार के किसी सर्वथा व्यावहारिक, नैतिक, सामाजिक और राजनीतिक कर्म को करने के लिए आते हैं, अवतार के कार्य का सच्चा विवरण नहीं मिलता। इस वर्णन में अवतार के आने का आध्यात्मिक हेतु छूट जाता है; और यदि इस बाह्य प्रयोजन को ही हम सब कुछ मान लें तो बुद्ध और ईसा को हमें अवतारों की कक्षा से अलग कर देना होगा, क्योंकि इनका काम तो दुष्टों को नष्ट करने और शिष्टों को बचाने का नहीं, बल्कि अखिल मानव-समाज को एक नया आध्यात्मिक संदेश सुनाना तथा दिव्य विकास और आध्यात्मिक सिद्धि का एक नया विधान देना था। धर्म शब्द को यदि हम केवल धार्मिक

www.the-comforter.org

अर्थ में ही ग्रहण करें अर्थात् इसे धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन का एक विधान मानें तो हम इस विषय के मूल में तो जरूर पहुँचेंगे, किन्तु इसमें भय है कि हम अवतार के एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य को कहीं दृष्टि की ओट न कर दें। भगवदवतारों के इतिहास में सर्वत्र ही यह दिखायी देता है कि उनका कार्य द्विविध होता है और यह अपरिहार्य है, द्विविध होने का कारण यह है कि अवतीर्ण भगवान मानव-जीवन में होने वाले भगवत्-कार्य को ही अपने हाथ में उठा लेते हैं, जगत् में जो भगवत्-इच्छा और भगवत्-ज्ञान काम कर रहे हैं, उन्हीं का अनुसरण कर अपना कार्य करते हैं और यह कार्य सदा आंतर और बाह्य दो प्रकार से सिद्ध होता है। आत्मा में आंतरिक उन्नति के द्वारा और जागतिक जीवन में बाह्य परिवर्तन द्वारा।

हो सकता है कि भगवान् का अवतार, किसी महान् आध्यात्मिक गुरु या नेता के रूप में हो, जैसे बुद्ध और ईसा, किन्तु सदा ही उनकी पार्थिव अभिव्यक्ति की समाप्ति के बाद भी उनके कर्म के फलस्वरूप जाति के केवल नैतिक जीवन में ही नहीं बल्कि उसके सामाजिक और बाह्य जीवन और आदर्शों में भी एक गंभीर और शक्तिशाली परिवर्तन हो जाता है।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

सिद्ध-योगियों की महिमा

साधकों के ज्ञान बोध के लिए स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज की पुस्तक 'अंतिम रचना' के लेख क्रमशः शुरू किये हैं, आशा है साधकों की आराधना में सहायक सिद्ध होंगे। उनको प्राचीन काल की आराधना की कठिनाईयों के बारे में जानकारी मिलेगी, कितनी कठिन आराधना थी और सद्गुरुदेव सियाग ने अति सहज में सिद्धयोग को धरती पर मानव मात्र के कल्याण के लिए उतारा है।

सामान्य प्रवचनकार चाहे बीज रूप माया, जीवत्व,ब्रह्म, उसे प्राप्त करने के उपाय आदि विषयों पर सुन्दर, अलंकृत तथा धारा प्रवाह प्रवचन करने में निपुण होते हैं किन्तु उन्हें इन बातों की प्रत्यक्ष अनुभूति शून्य-तुल्य होती है। उनकी सारी वाचालता काल्पनिक भावनात्मक आधार पर, पृथ्वी पर रहते हुए आकाश में बौद्धिक-विचरण के समान तथ्य रहित होती है।

अतः लल ने वनों के एकान्त एवं दुर्गम स्थलों, अंधकार में डूबी गिरि-कन्दराओं, वर्षों से उजाड़ पड़े खण्डहरों, उच्च पर्वतों के नुकीले शिखरों, नदी-किनारे के सुनसान पड़े घाटों, ऊँची-नीची पथरीली चट्टानों में, गुरु की खोज में भटकना आरंभ कर दिया। भूख-प्यास की चिन्ता किए बिना, वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकती फिरी। पत्थरों की ठोकरों तथा जंगल में बिखरे काटों की चुभन से उसके पाँव लहुलुहान थे। पर वह चली जा रही थी, बढ़े जा रही थी, एक लक्ष्य को लेकर। जंगल के हिंसक पशुओं का भय उसके मन से कोसों दूर था। उन्हें वह अपना मित्र मानती-समझती थी। यदि कभी आमना-सामना हो जाता तो वह निर्भय होकर उन्हें प्रणाम कर लेती थी। जब उसे रात का अंधकार घेर लेता था तो किसी चट्टान की ओट में, किसी वृक्ष के नीचे अथवा कहीं नदी किनारे ध्यानमग्न रहकर रात निकाल देती थी।

गुरु की तलाश में भटकते हुए लल ने अनेक संतों, सूफियों, दरवेशों,

भक्तों, योगियों तथा साधन-प्रेमियों के दर्शन किए। उसकी इस तड़प तथा लगन का कुछ थोड़ा सा ही अंश सामान्य जनता के समक्ष प्रकट हो सका। जहाँ वह किसी प्रसिद्ध संत महापुरुष को मिलती, वहीं इस तड़पन

का कुछ अंश प्रकट हो पाता। अन्यथा न तो लल ने किसी को कुछ बताया, न ही उस विषय में किसी को कोई जानकारी प्राप्त हो पाई। यह कोई पैमाना नहीं है कि जो अधिक प्रसिद्ध हो, वह बड़ा महात्मा ही हो। प्रायः संत महापुरुष अपने-आपको छिपाकर रखते हैं, प्रसिद्धि को अत्यन्त घातक समझते हैं। ऐसे ही लोकेषणा से उदासीन परम पुरुष की लल को तलाश थी।

लल के अन्तर में धधकती प्रेम तथा विरह की अग्नि को जान-समझ पाना सामान्य जन के लिए कठिन था। इतिहासकार तथा साहित्यकार भी कैसे उल्लेख कर सकते थे। संतों के साथ यही तो होता है। वे कुछ कहते नहीं हैं। उनके जीवन-वृत्तान्त का अधिकांश भाग रहस्य की परतों में दबा रह जाता है। फिर लोग उन महापुरुषों के विषय में सच्ची-झूठी कल्पनाएँ करते तथा प्रचारित करते रहते हैं। उन्हीं जन-कल्पनाओं के आधार पर साहित्यकार अपनी रचना का ताना-बाना बुनते रहते हैं। किसी महापुरुष की आन्तरिक स्थिति को समझ पाने के लिए उसी स्तर, अथवा उससे भी ऊँची भूमिका प्राप्त महापुरुष की आवश्यकता होती है। जिन इतिहासकारों तथा लेखकों ने लल के विषय में लेखनी चलाई है अथवा जो बातें जन-समाज में प्रचलित हैं, वह वहीं तक हैं जहाँ तक उनकी गति हो सकती है। ऐसे लोगों के लिए बाकी सभी अदृश्य तथ्य आवरण के नीचे दबे

www.the-comforter.org

रह जाते हैं।

लल के संबंध में गुप्त जानकारी को उद्घाटित करने का श्रेय पूरी तरह गुरुदेव स्वामी विष्णु तीर्थ महाराज (ब्रह्मलीन) को जाता है। पूज्य गुरुदेव अपार दैवी शक्तियों के स्वामी थे। भूत अथवा भविष्य काल की जिस भी घटना पर मन को एकाग्र कर देते थे, उनके समक्ष प्रत्यक्ष हो जाती थी। लल पर उनकी बड़ी श्रद्धा थी तथा कई बार उसकी चर्चा भी किया करते थे। किन्तु बात वहीं फिर आ जाती है। उन्होंने लल-विषयक अपनी अनुभूतियों को जन-समाज के समक्ष कभी प्रकट नहीं किया। मुझे उनके द्वारा जो कुछ भी जानकारी प्राप्त हो सकी, उसे मैंने इस पुस्तक में लिख दिया है।

लल मुस्लिम सूफी दरवेशों के संपर्क में थी। उनके साथ सत्संग भी करती थी, उनकी कई बातों से प्रभावित भी थी किन्तु वह जन्म से हिन्दू ब्राह्मण थी। हिन्दू सन्तों एवं भक्तों के भी दर्शन-सत्संग करती थी इसलिए मुसलमान अपना तथा हिन्दू अपना मानते थे।

लल न मुसलमानों की थी, न हिन्दुओं की। वह दोनों की थी। उसकी दृष्टि में ये दो थे ही नहीं। दो की कल्पना मन का संकुचित भाव है। वह मुसलमान की सीमाओं से ऊपर उठ चुकी थी। वह तो बस प्रभु की दीवानी (खुदा की आशिक) थी, प्रभु के लिए ही संसार में रही, प्रभु के लिए ही संसार से अदृश्य हो गई। सारा संसार उसे एक कौतुक दिखाई देता था। हिन्दू-मुसलमान की सीमाएँ भी उसी कौतुक के ही अन्तर्गत् है। संसार में प्रभु की भाँति-भाँति की लीलाएँ प्रकट हो रही हैं। उसने हिन्दू तथा मुसलमान दोनों से समान रूप से प्यार किया तथा दोनों को ही कसकर फटकार लगाई। दोनों का अपना-अपना सम्प्रदाय, अलग-अलग सभ्यताएँ एवं मान्यताएँ मन की कल्पनाएँ हैं।

अब तक का वृत्तान्त पढ़कर पाठकों को यह ज्ञात हो ही चुका होगा कि लल

www.the-comforter.org

भविष दृष्टा थी। भविष्य की खिड़की में खड़े हो जाने पर उसे भावी घटनाएँ ज्ञात हो जाती थी। प्राय उसे वह व्यक्त कम ही करती थी। व्यक्त कर देने से प्रसिद्धि हो जाती है तथा भविष्य जानने के इच्छुक लोगों का तांता लग जाता है। कई महात्मा इसमें गर्व का अनुभव करते हैं किन्तु लल के समीप यह बखोड़ा ही था। किन्तु फिर भी, कभी-कभार, उस के मुँह से कोई बात निकल ही जाती थी।

सुल्तान अलाउद्दीन के बड़े पुत्र शाहबुद्दीन, अपने साथियों आदर्श रावल, मलिक जिदार तथा अरुता जी के साथ जंगल में शिकार खेल रहे थे कि सहसा उन्हें प्यास लगी। तब वहाँ, हाथ में शरबत का गिलास लिए लल प्रकट हुई तथा राजकुमार को शरबत स्वीकार करने के लिए कहा । राजकुमार ने गिलास हाथ में लिया, थोड़ा सा पिया तथा गिलास आदर्श रावल की तरफ बढ़ा दिया। उन्होंने भी थोड़ा पिया तथा गिलास मलिक ज़िदार की ओर कर दिया। जब तीसरे साथी अरूता जी के पास गिलास पहुँचा तो वह खाली था । इस पर लल ने कहा, 'शाहबुद्दीन सुल्तान बनेंगे, आदर्श रावल प्रधान मंत्री होंगे, मलिक ज़िदार प्रधान सेनापति, किन्तु अरूता जी घर लौटते ही तत्काल मर जाएंगें।' सब घटनाएँ इसी कथन के अनुसार घटित हुईं।

कुछ लोगों को इन भविष्यवक्ताओं पर अश्रद्धा हो सकती है। ठीक भी है, प्रायः भविष्यवाणियाँ तथ्यहीन होती हैं किन्तु सारा संसार एक जैसा नहीं है। कई सिद्धपुरुष ऐसे भी होते हैं जिनकी वाणी कभी मिथ्या नहीं होती। भौतिक वादियों को यह मानने में संकोच होता है किन्तु मेरे जीवन में एक प्रत्यक्ष उदाहरण गुरुदेव स्वामी विष्णु तीर्थ महाराज का आया है जिनका कहा कभी झूठ नहीं हुआ। वह भी प्रायः भविष्य के बारे में कुछ कहने से बचने का प्रयास करते थे ।यदि कभी कुछ कह दिया तो वैसे का वैसा ही घटित हो जाता

www.the-comforter.org

था। लल भी ऐसी ही एक सत्य सिद्ध योगिनी थी। सत्य को सिद्ध करने के लिए, उसे क्या कुछ सहन करना पड़ा होगा। कितनी मानसिक पीड़ाएँ झेली होंगी। यह सब जान पाने के लिए संसार के पास कोई उपाय नहीं, न यह सब जानने में किसी की रुचि है।

योग-मार्ग में एक ऐसी अवस्था आती है जब साधक के अपने तथा अन्यों के संचित संस्कार तथा प्रारब्ध संस्कार प्रत्यक्ष हो उठते हैं। संचित संस्कारों के प्रत्यक्षीकरण पर पूर्व के जन्मों का वृत्तान्त ज्ञात हो जाता है तो प्रारब्ध संस्कार प्रत्यक्ष होने पर भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं की सूचना होती है।

लल को साधना करते-करते स्वभावतः ही यह स्थिति उदय हो उठी थी किन्तु प्रायः वह इस सिद्धि का उपयोग नहीं किया करती थी। यदि कभी अनचाहे ही सिद्धि का प्रयोग हो जाय तथा भविष्य की किसी भावी घटना का पता चल जाता तो वह उसे अपने तक ही सीमित रखने का यत्न करती।

लल पर काश्मीर शैव दर्शन का प्रभाव स्पष्ट था। जगत् को वह शिव शक्ति की लीलाओं का विस्तार स्वीकार करती थी तथा शिव तत्त्व को कण-कण में व्याप्त मानती-जानती थी। जड़ जगत् भी चैतन्य शक्ति का ही एक स्तर है। मिथ्या जगत् का अर्थ परिवर्तनशील जगत् है। संसार को अपने से भिन्न अनुभव करना ही जीवत्व तथा अज्ञान का कारण है।

शैवतंत्रों के मतानुसार ही उसने हिन्दुओं की परम्परागत रूढ़ियों को अमान्य कर दिया। किसी के भी घर में भोजन कर लेने में उसे कोई संकोच नहीं था। काश्मीर के ब्राह्मणों में मांसाहार का प्रचलन था, किन्तु वह उसके एकदम विरुद्ध थी। उसका मुख्य लक्ष्य साधन, वैराग्य, प्रभु-प्रेम, मन के संतुलन तथा अनुशासित जीवन पर था।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

हम गुरु की संतान हैं

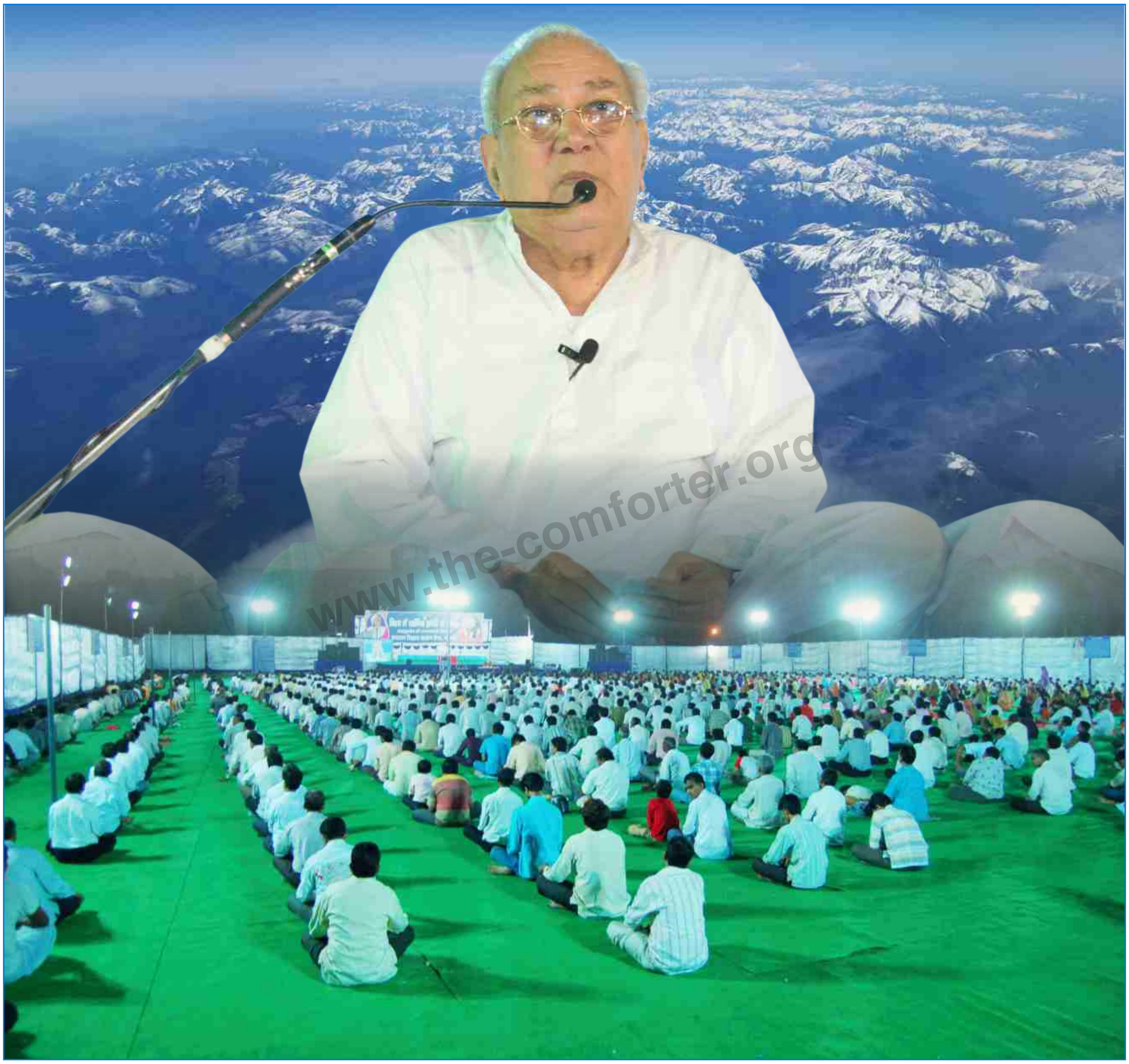

"माता-पिता हमें केवल जन्म ही देते हैं परंतु गुरु हमें मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं। हम गुरु की संतान हैं-उनके मानस पुत्र हैं।"

-स्वामी विवेकानन्द साहित्य-7   मेरे गुरुदेव शीर्षक से

गतांक से आगे...

रूपान्तरण (Transformation)

"आवश्यक है कि अच्छी हो या बुरी, स्वयं परिपाटी ही बदली जाये, क्योंकि अच्छे के साथ अनिवार्य रूप से बुरा जुड़ा हुआ है। सब चमत्कार केवल हमारी दीनता का उलटा अथवा कहना चाहिए सीधा पहलू भर है। पर जरूरत हमें एक सुधरे-सँवरे संसार की नहीं, नये संसार की है। एक 'उच्च प्रकार का समाहित वातावरण हमें नहीं चाहिए; बल्कि यदि असंगत न रहे तो हम कह सकते हैं कि निम्न प्रकार के समाहित वातावरण की जरूरत है, यहाँ सभी कुछ पुण्यधाम हो जाना चाहिए।"

मैं चिरकाल से गहराई में खोद रहा हूँ, दलदल और गंदगी के अंदर, ना विजय एक शय्या सुवर्णसरित् के गीत के लिए, एक निवास अमर अग्नि के लिए सहस्र-सहस्र घाव मेरी देह से झांक रहे और उस मार्ग-निर्माता को सभी कठिनाइयों का, यहाँ तक कि मौत का भी सामना करना होगा, उनका अस्तित्व मिटा देने के लिए नहीं बल्कि उनका रूपांतर करने के लिए। पर अपने ऊपर लिए बिना किसी चीज़ का रूपांतर नहीं किया जा सकताः तुझे सब स्वयं वहन करना होगा ताकि सब बदल सके, सावित्री ने कहा था।

इसी कारण श्री अरविन्द ने सन् 1950 में दिसंबर मास की 5 तारीख को देहत्याग किया। उनकी मृत्यु का कारण मूत्ररक्तता रोग ठहराया गया जबकि उन्हें दूसरे लोगों का रोग निवारण करने में केवल कुछ पल लगते थे। सलीब पर मरना अति स्पर्शी है इसमें संशय नहीं, किन्तु सलीबों पर प्राणत्याग, विशेषतया यदि उन्हें जो-उपासना का विषय बना लिया जाये तो वे केवल मृत्युधर्म को ही चिरस्थायी, अविस्मरणीय बनाते हैं। श्री माँ का कहना है संसार का उद्धार सूली पर देह का रक्त बहा कर

www.the-comforter.org

नहीं बल्कि देह को महिमामय बना कर होगा।

न,न,यह एक प्रदर्शनीय कार्य नहीं, यह तो 'अतिसूक्ष्म कार्य' है और खुदाई करनी होगी संसार के महापंक में।

अतएव कठिनाइयों का एक और वर्ग है (पर एक दूसरे रूप में है यह भी वही) जिसका संबंध व्यक्ति के देहगत, भौतिक तत्त्व के अवरोध के साथ नहीं, बल्कि सारी पृथ्वी के अवचेतन अवरोध के साथ है। श्री अरविन्द की मुठभेड़ मृत्यु के साथ यहीं हुई। इसी के अंदर श्री माँ कार्य को आगे चला रही हैं।यह किस्सा, जो कि हमारा किस्सा है, किस जगह चल रहा है, यह जानने की यदि हम इच्छा रखते हों और कार्य की प्रक्रिया को समझना चाहें तो वापिस स्वयं विकास प्रक्रिया पर ही दृष्टि घुमाने की जरूरत है। विकासक्रम में एक नवीन कोटि का आविर्भाव, चाहे वह जड़तत्त्व के अंदर जीवन शक्ति का हो अथवा जीवन शक्ति में मनस्तत्त्व का, सदा एक दोहरे दबाव के द्वारा सम्पन्न हुआ करता है–एक ओर ज़ोर लग रहा होता है अंदर से या नीचे से अंतर्वलित तत्त्व जो कि बाहर आना चाहता है, और दूसरी ओर दबाव पड़ता है 'बाहर' या 'ऊपर' का यानी वही तत्त्व पहले से अपने लोक में जिस प्रकार विद्यमान है, उसका इन दोनों के संयोग ने, उदाहरणतः इधर से कुछ सजीव आकृतियों के अंदर अंतर्वलित मानस के ज़ोर, और नीचे की ओर विकास करते हुए या अधस्मरण क्रम में मनोलोक की अपने स्तर पर जैसी रचना हुई थी।

उधर से उस मनोलोक के दबाव ने अंततः प्राण की सीमाओं को विदीर्ण कर डाला और अचानक एक दिन प्राण में, जीवन में, मानस का आविर्भाव हो गया। सब अंतर्वलित है, जड़तत्त्व के अंदर सब पहले ही

www.the-comforter.org

विद्यमान है। किन्तु अंतर्वलन के लिए अपने आपको खोलना तब तक संभव नहीं जब तक नीचे की पुकार के जवाब में ऊपर का दबाव उसकी मुहर न तोड़ दे, ठीक उसी तरह जैसे सूरज की किरणें बीज के आवरण को भेद डालती हैं। इस समय जड़तत्त्व के अंदर अंतर्वलित अतिमानस एक आध्यात्मिक मन में, अमरत्व के लिए, सत्य, सौन्दर्य आदि के लिए पार्थिव आकांक्षाओं के अंदर से ज़ोर मार रहा है; साथ ही अंतःप्रेरणाएँ बन, दिव्य संदेश और ज्ञानप्रकाश बन वह ऊपर से, अपने निजी सनातन लोक से दबाव डाल रहा है। यही जिसे बाइबल ने 'नयी धरती' और 'नये स्वर्ग' के आविर्भाव का नित्य संबंधी कर अपने ही ढंग से बताया है (''नवीन स्वर्ग और नवीन धरती जहाँ ईश्वरीय निवास करेगा''), क्योंकि इस नये स्वर्ग अथवा कहना चाहिए कि चेतना की इसी अतिमानसिक कोटि के बिना नयी धरती का आविर्भाव नहीं हो सकता। नयी धरती अतिमानसिक चेतना के नये 'स्वर्ग' का परिणाम होगी जिस प्रकार वर्तमान संसार पुराने मानसिक अथवा देवी-देवताओं और धर्मों के अधिमानसिक 'स्वर्ग' का फल है।

विकास की सब सीढ़ियों पर इसी प्रकार चलता है-ऊर्ध्व और निम्न सदा साथ जाते हैं। किन्तु विकासक्रम की किसी भी अवस्था में नये 'ऊर्ध्व' या चेतना की नवीन कोटि का आविर्भाव हठात् कोई जादू नहीं होता, जो पिछली सारी कोटियों को ही बदल दे। जीवन-क्षेत्र में पहले-पहल के सूक्ष्म कीटाणुओं और स्तनधारी जीवों के आविर्भाव के बीच कितने लाख वर्ष भौतिक तमस् पर काबू पाने में, जड़तत्त्व के 'प्राणीकरण' में लग गये, सो हमसे छिपा नहीं है।

इसी प्रकार नेआँदर्थाल के मानव और प्लैटो के आविर्भाव के बीच हजारों वर्ष पहली दोनों सीढ़ियों के

www.the-comforter.org

अवरोध को जीतने में, जीवन के 'मानसीकरण'में, पूरा मनोमय मानव बनने में लगे। पर आज भी कितने लोग होंगे जो सचमुच मानस के शासन में रहते हैं और जीवन शक्ति के आवेगों के इशारे पर नहीं नाचते? विकासक्रम के मार्गप्रदर्शक का, चाहे वह किसी भी स्तर पर क्यों न हो, सारा कार्य यथार्थतः यही होता है कि वह नये ऊर्ध्व और पुराने निम्न के बीच संबंध जोड़े। जब ऊर्ध्व का निम्न के साथ सम्मिलन होता है, तब विकासक्रम का एक चक्र पूरा हो जाता है। इसी प्रकार मानसिक विकास का अग्रणी सहसा जब अतिमानस में जा निकला तो उसकी खोज अचानक एक जादू नहीं हो गई, जो सब पुराने नियमों को अस्त-व्यस्त कर दे।

जिस तरह नेऑदर्थाल के मानव ने प्लैटो तक छलांग नहीं लगायी थी, उसी तरह वह भी पूर्ण अतिमानव तक छलांग नहीं लगाता। उसे सारी पिछली कोटियों का 'अतिमानसीकरण' करना होगा। इसमें संदेह नहीं कि उसको चेतना में उच्चतम शिखर और निम्नतम तली का, परम आत्मन् और जड़तत्त्व का, परम सकार और परम नकार का परस्पर मिलन हो रहा है, और स्वभावतः उसकी शक्तियाँ कहीं अधिक बढ़ चुकी होती हैं, पर आखिर बढ़ती हैं उन बचे अवरोधों के अनुपात में ही जिनका कि उसे सामना करना है, क्योंकि ज्यों-ज्यों विकासकाम आगे बढ़ता है, त्यों-त्यों वह और अधिक गहरी परतों को स्पर्श करता है।

जीवनतत्त्व ने धरती की केवल ऊपरी भौतिक परत को बसाया था। मनस्तत्त्व अपने निकटतम अतीत, मानसिक अवचेतन में, और जीवन की पिछली अराजकता से जैसे-तैसे अपनी बस्ती बना रहा है। और अतिमानस तत्त्व का न केवल मानसिक तथा प्राणिक अवचेतन के साथ, बल्कि और भी अधिक दूरस्थ

www.the-comforter.org

अतीत, भौतिक अवचेतन के और अचेतन के साथ सामना है। हम जितना अधिक ऊपर चढ़ते हैं, उतने ही नीचे खिंच जाते हैं। विकास अधिकाधिक ऊपर की ओर, आगे ही आगे स्वर्ग में नहीं, बल्कि अधिकाधिक गहराई में जा रहा है और विकास का हरेक चक्र या कुण्डल पहले की अपेक्षा कुछ नीचे, उस चरम केन्द्र के कुछ अधिक निकट जा कर पूरा होता है, जहाँ अन्ततः दिव्य उच्चतम और दिव्य निम्नतम का, आकाश और पृथ्वी का सम्मिलन होगा।

अतः अग्रगामी के लिए बीच के मानसिक, प्राणिक और भौतिक मैदान का परिष्कार करना आवश्यक है, ताकि दोनों ध्रुव सफल रूप में मिल सकें। जब केवल मानसिक और प्राणिक ही नहीं बल्कि भौतिक मिलन सम्पन्न हो लेगा, तब एक अतिमानसिक देह में, एक पूर्ण अतिमानव में जड़तत्त्व के अंदर परम आत्मन् का आविर्भाव होगा।

क्रमशः अगले अंक में...

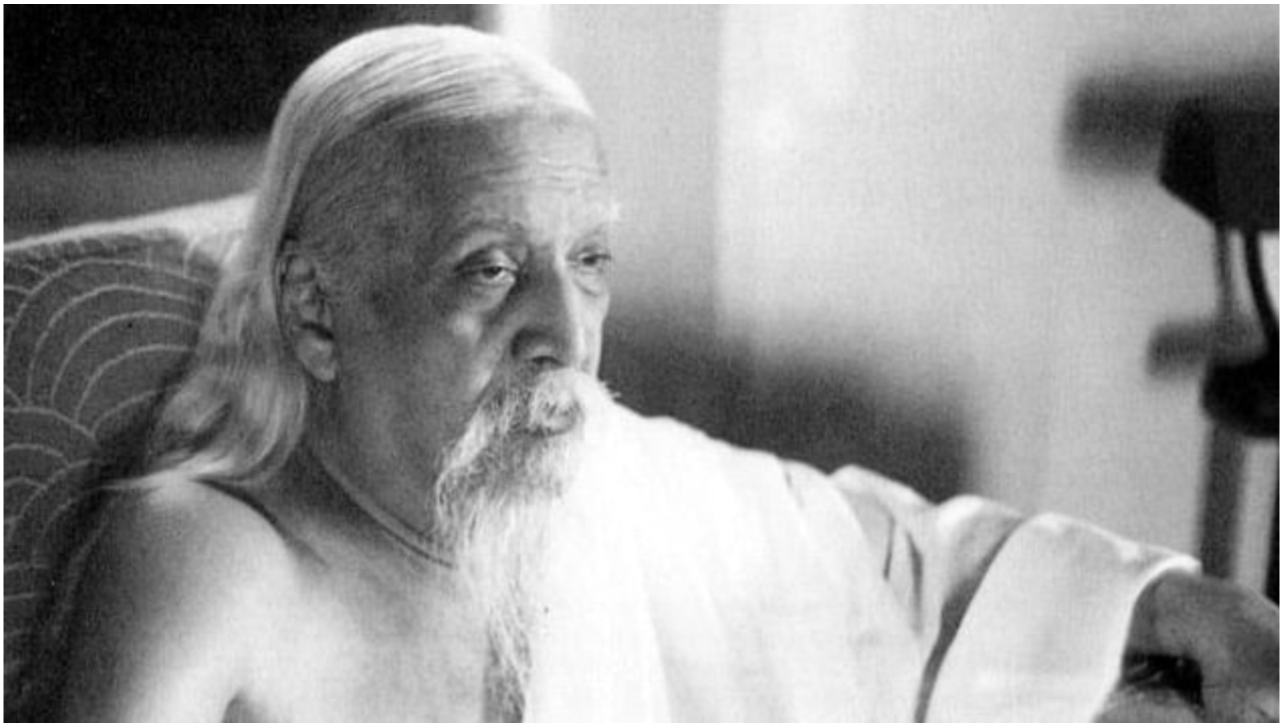

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

गुरुवार १६ जून अधिक जेठ सु. २ वि ३१ जेठ सं. २०४५

जीवन में सबसे बड़ी तपस्या कला है

शब्द से सर्वभूतों की उत्पत्ति।

संसार भर के प्रायः सभी धर्म इस सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं कि 'शब्द' से ही सर्वभूतों की उत्पत्ति हुई है। हिन्दू दर्शन के अनुसार 'ॐ' से सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में इस सम्बन्ध में ८वें अध्याय के १३वें श्लोक तथा १७वें अध्याय के २३वें तथा २४वें श्लोक में स्पष्ट कहा है:-

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥१३॥

जो पुरुष ॐ ऐसे (इस) एक अक्षररूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ (और उसके अर्थस्वरूप) मेरे को चिन्तन करता हुआ, शरीर को त्याग कर जाता है, वह पुरुष परम गति को प्राप्त होता है।

ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा ॥२३॥

ॐ तत सत् ऐसे तीन प्रकार का सच्चिदानन्दघन ब्रह्म का नाम कहा है। उसी से सृष्टि के आदिकाल में ब्राह्मण और वेद तथा यज्ञादिक रचे गये हैं।

तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥२४॥

इसलिए वेद को कथन करने वाले श्रेष्ठ पुरुषों की शास्त्रविधि से नियत की हुई यज्ञ, दान और तपरूप क्रियाएं सदा ॐ ऐसे (इस परमात्मा के नाम को) उच्चारण करके (ही) आरम्भ होती हैं।

ईसाई धर्म में भी संसार की उत्पत्ति शब्द से मानते हैं। इस सम्बन्ध में बाइबिल स्पष्ट कहती है:- "आदि में वचन (शब्द) था, और वचन (शब्द) परमेश्वर के साथ था, और वचन (शब्द) परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। उसमें जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी। और ज्योति अन्धकार में चमकती है, और अन्धकार ने उसे ग्रहण नहीं किया"। इसी प्रकार यहूदि मत भी संसार की उत्पत्ति शब्द से मानता है।

सद्‌गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

शुक्रवार १७ जून अधिक जेठ सु. ३ वि. १ अषाढ़ सं. २०४५

दूसरो के चित्त का कोई ठिकाना नहीं।

यहूदियों के सृष्ट्युत्पत्ति-प्रकरण में कहा गया है:- "समुद्र के ऊपरी तल पर अन्धकार था और ईश्वर की आत्मा जलों पर विचरण कर रही थी। शब्द के द्वारा उसने समुद्र को अंतरिक्ष से विभक्त किया जिसके परिणामस्वरूप अब यहाँ दो समुद्र हैं, एक पार्थिव जो अंतरिक्ष के नीचे है, दूसरा द्युलोकीय जो अंतरिक्ष के ऊपर है"। इस सम्बन्ध में वेदों के रहस्य को स्पष्ट करते हुए महर्षि श्री अरविन्द ने कहा है:- इस सार्वभौम विश्वास को या इस केवल रूपक को गुह्यवादियों ने पकड़ा और इसमें अपने समृद्ध मनोवैज्ञानिक मूल्यों को भर दिया। एक अंतरिक्ष की जगह उन्होंने दो को देखा, एक पार्थिव और दूसरा दिव्य। दो सागरों के स्थान पर उनकी अन्तर्मुख दृष्टि के सामने तीन सागर प्रसारित हो उठे। जो कुछ उन्होंने देखा वह एक ऐसी वस्तु थी, जिसे मानव कभी आगे चलकर देखेगा जब प्रकृति और जगत को देखने की उसकी भौतिक दृष्टि आंतरात्मिक दृष्टि में बदल जायगी। उनके नीचे उन्होंने देखी अगाध रात्रि और तरंगित होता हुआ तमस्, अन्धकार में छिपा अन्धकार, निश्चेतना समुद्र जिससे "एकमेव" के शक्तिशाली तपस् के द्वारा उनकी सत्ता उद्भूत हुई थी। उनके ऊपर उन्होंने देखा प्रकाश और मधुरता का दूरवर्ती समुद्र जो उच्चतम व्योम है, आनन्दस्वरूप विष्णु का परम पद है, जिसकी ओर उनकी आकर्षित सत्ता को आरोहण करना है। इनमें से एक था, अन्धकारपूर्ण आकाश, आकारहीन, जड़, निश्चेतन असत्; दूसरा था ज्योतिर्मय व्योम सदृश सर्व-चेतन एक निश्चेतन सत्। ये दोनों "एकमेव" के ही विस्तार थे, एक अन्धकारमय दूसरा प्रकाशमय। इन दो अज्ञात अनन्तताओं के अर्थात अनन्त सम्भाव्य शून्य और अनन्त परिपूर्णत्व के बीच उन्होंने अपने चारों ओर अपनी आँखों के सामने, नीचे, ऊपर नित्य विकसनशील चेतन सत्ता का तीसरा समुद्र देखा, एक प्रकार की असीम तरंग देखी, जिसको उन्होंने एक साहसपूर्ण रूपक के द्वारा इस प्रकार वर्णित किया कि वह द्युलोक से परे परमोच्च समुद्रों तक आरोहण करती या उनकी ओर प्रवाहित होती है। यह है वह भयानक समुद्र जो हमें पोत द्वारा पार करना है"। मेरे साथ निरन्तर आध्यात्मिक सत्संग करने वाले उपरोक्त व्याख्या के अनुसार आंतरात्मिक दृष्टि से सब कुछ देख रहे हैं यानि प्रत्यक्षानुभूति कर रहे हैं। लगता है वेदों की सच्चाई हम संसार के सामने शीघ्र प्रमाणित कर सकेंगे।

गतांक से आगे...

कठिनाई में...

योग के आधार

–महर्षि श्री अरविन्द

कामवेग पर प्रभुत्व स्थापित करना होगा–काम केंद्र को इतना अधिक वश में कर लेना होगा कि काम–शक्ति (वीर्य) बाहर निक्षिप्त और नष्ट न हो। बल्कि ऊपर की ओर खिंच जाये। वास्तव में इसी उपाय से शक्र के अंदर निहित शक्ति अन्य सभी शक्तियों को धारण करने वाली मूल भौतिक शक्ति में रेतस् ओजस् में परिवर्तित हो सकती है। परंतु कामवासनाओं को और उसके किसी प्रकार के सूक्ष्म उपभोग को यदि साधना के साथ मिला दिया जाये और उसे साधना का एक अंग मान लिया जाये तो इससे अधिक भयंकर और कोई भूल नहीं हो सकती। यह आध्यात्मिक पतन की ओर सरपट दौड़ पड़ने का व्यर्थ उपाय है और इससे हमारे वातावरण में ऐसी शक्तियाँ आकर फैल जाती हैं जो अतिमानसिक अवतरण का रास्ता बंद कर देती हैं और उसके बदले हमारी सत्ता में विशृंखला और सर्वनाश का बीज बोने के लिये विरोधी प्राणमय शक्तियों का अवतरण कराती हैं। यदि दिव्य सत्य को नीचे उतार लाना हो और दिव्य कर्म को संपन्न करना हो तो इस विकृत गति को–अगर वह हमारे अंदर उत्पन्न होने की चेष्टा करे तो–एकदम निकाल बाहर करना होगा और अपनी चेतना में से इसका चिह्न तक मिटा देना होगा।

यह समझना भी भूल है कि स्थूल रूप से तो कामोपभोग का त्याग करना होगा पर उसका कोई विशिष्ट

www.the-comforter.org

आभ्यंतरीण सूक्ष्म प्रतिरूप कामकेंद्र के रूपांतर का ही एक अंग है। प्रकृति के अंदर यह जो पशुसुलभ कामशक्ति की क्रिया है वह अज्ञानमयी स्थूल सृष्टि की विधि-व्यवस्था के अन्दर एक विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि का एक कौशलमात्र है। परंतु इस क्रिया के साथ-साथ एक प्राणगत उत्तेजना संलग्न होती है जो वातावरण में इस प्रकार के अत्यंत अनुकूल अवसर और कंपन उत्पन्न करती है जिससे कि ठीक वे ही सब प्राणमय शक्तियाँ और सत्ताएं, जिनका कि सारा कार्य ही अतिमानसिक ज्योति के अवतरण को रोकना है, अंदर घुस आता है, इस क्रिया के साथ जो एक प्रकार का सुख लगा हुआ है वह आनंद का विकृत रूप है, सच्चा रूप नहीं है। शरीर में प्राप्त होने वाले दिव्यानंद का गुण, उसकी गति और उसका सत्त्व एकदम दूसरे प्रकार का होता है; वह आनंद मूलतः आत्म-स्थित होता है और उसकी अभिव्यक्ति एकमात्र भगवान् के साथ आंतरिक मिलन के ऊपर निर्भर करती है। तुमने भागवत प्रेम की बात लिखी है, परंतु जब भागवत प्रेम शरीर का स्पर्श करता है तब वह स्थूल निम्नगत प्राणज प्रवृत्तियों को नहीं जगाता; इन प्रवृत्तियों को चरितार्थ करने पर तो वह प्रेम दूर हट जाता है और जिस ऊंचाई से उसे इस जड़ सृष्टि की मलिनता के अंदर-जिसे रूपांतरित करने की शक्ति केवल उसी में है-उतार लाना काफी कठिन काम है, वहीं वापस लौट जाने के लिये बाध्य होता है। भागवत प्रेम को एकमात्र उसी दरवाजे से-हृत्पुरुष के दरवाजे से-पाने की चेष्टा करो जिससे

www.the-comforter.org

प्रवेश करना वह स्वीकार करता है, और निम्नतर प्राण की भूलभ्रांति को दूर फेंक दो।

शरीर की सिद्धि प्राप्त करने के लिये कामकेंद्र और उसकी शक्ति का रूपांतर आवश्यक है; क्योंकि हमारे आधार में जितनी भी मनोमय, प्राणमय और अन्नमय शक्तियाँ हैं उन सबका आधार इस शरीर में बस यही चीज है। उसे अंतरंग ज्योति, सृजनात्मिका शक्ति, विशुद्ध भागवत आनंद की राशि और गति में परिवर्तित कर देना होगा। जब हम अतिमानस-ज्योति, शक्ति और आनंद को उस केंद्र के अंदर उतार लायेंगे केवल तभी उसका परिवर्तन साधित हो सकता है। उसके बाद उसकी क्रिया क्या होगी इसका निर्णय तो बस अतिमानस-सत्य और भगवती माता की सृजनात्मिका सृष्टि और संकल्पशक्ति ही करेगी। तब अवश्य ही वह सचेतन सत्य की क्रिया होगी, उस अंधकार और अज्ञान की क्रिया नहीं होगी जिनके साथ काम वासना और कामोपभोग का संबंध होता है; वह होगी जीवन-शक्तियों का संरक्षण और उन्हें मुक्त निष्काम भाव से विकीर्ण करने की क्रिया न कि उसे बाहर फेंक देने और नष्ट कर देने की क्रिया।

इस कल्पना को दूर हटाओ कि अतिमानस-जीवन प्राण और शरीर का वासनाओं की ही केवल उच्चतर तृप्ति का जीवन होगाः मानव-प्रकृति के अंदर पशु की महिमा को प्रतिष्ठित करने की जो यह आशा है, इससे बढ़कर कोई दूसरी चीज सत्य के अवतरण के मार्ग में बाधा नहीं

www.the-comforter.org

उपस्थित कर सकती। मन चाहता है कि अतिमानसिक अवस्था उसकी अपनी ही पोषित धारणाओं और कल्पनाओं का समर्थन करने वाली हो; प्राण चाहता है कि वह उसकी ही निजी वासनाओं का बढ़ा-चढ़ा रूप हो; शरीर चाहता है कि वह उसके ही अपने आरामों, सुखों और अभ्यासों के प्रचुर मात्रा में लगातार बने रहने की अवस्था हो। यदि उसे यही सब होना हो तो फिर वह केवल पाशव और मानव प्रकृति की ही एक अतिरंजित और अत्यंत परिवर्द्धित परिणति होगी, न कि मानवता से दिव्यता में रूपांतर।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा

का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग द्वारा शक्तिपात दीक्षा से साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है। अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार गुरुदेव इस दिव्य ज्ञान को विश्व भर में निःशुल्क बाँट रहे हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे:- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है और ध्यान के समय विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ स्वयं करवाती हैं। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके

www.the-comforter.org

आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है, जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है। सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से यह मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं संजीवनी मंत्र के जाप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी., दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

www.the-comforter.org

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595
Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022

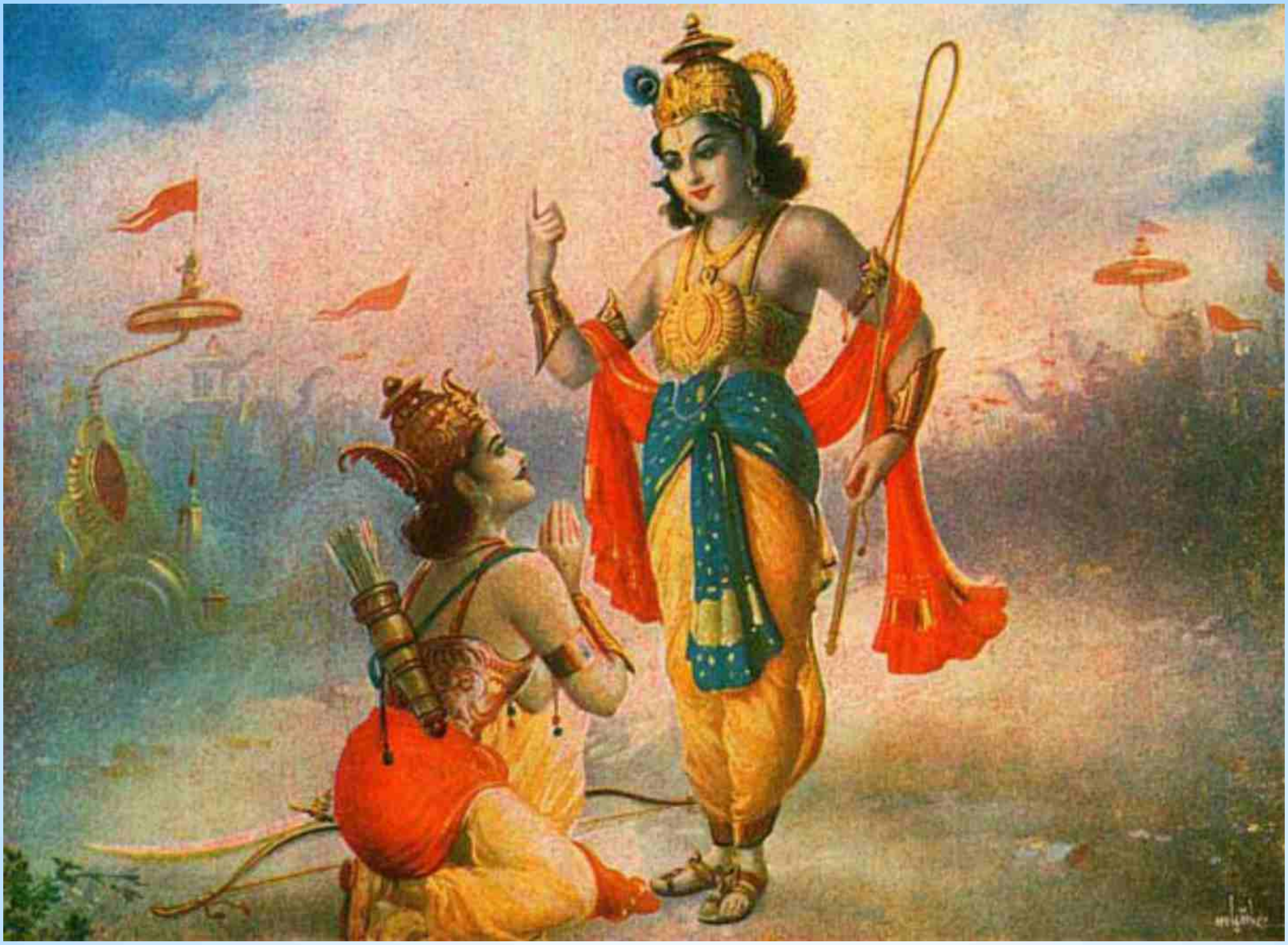

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्____

____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।